

पैचामृताभिष्ठेक पाठ[े] ^{एवं} श्रावक पूजाविधान

: भग्राहक:

श्री प्रतिष्ठाचार्य ज्ञ. सूरजमलजी जैन / गाचार्य संघस्थ

'सपादक:

चर्धमान पाइवंनाथ शास्त्री क्त्याण भवन, सोलापूर.

: प्रकाशक :

श्री मांगीलालजी पहाडचा उस्मानगंज, हैदराबाद (बां. प्र.)

प्रति १०००

वीर सं. २४९१ सन् १९६५

मूल्य निःयपूजन विषय। नुऋमणिका

| 111113611161 | |
|-------------------------------|------------|
| प्र. नं. | पृष्ठ नं |
| १ प्रारमिक विधि | |
| २ पूजामृखविधि | Ŧ |
| ३ ईर्यापथ शुद्धि | * |
| ४ सकलीकरण | ; ų |
| ५ पंचामृताभिषेक पाठ | હ |
| ६ शांतिमंत्र | १७ |
| ७ महाशांतिमंत्र | १ ९ |
| ८ अरिहंत पूजा | ३३ |
| ९ देववंदनाविधि | ३७ |
| १० स्व. आचार्यं शांतिसागर | • |
| वीरसागरचंद्रसागर सम्मिलितपूजन | ३८ |
| ११ आ. शांतिसागर पूजन | ५४ |
| १२ आ. वीरसागर पूजन | ६० |
| १३ मा शिवसागर पूजन | ६५ |
| १४ श्री मुनित्रय आरती | 00 |
| १५ भी शांतिसागर आरती | ७१ |
| १६ श्री वीरसागर आरती | ७२ |
| १७ श्री शिवसागर आरती | ७२ |
| १८ श्री आदिनाथ आरती | इथ |
| १९ भी पार्स्वनाथ आरती | 98 |
| २० श्री शांतिनाथ आरती | ७५ |
| २१ श्री पंचपरमेष्ठीकी सारती | ६७ |
| २२ श्री महावीरस्वामीकी आरती | ७७ |
| २३ श्री जिनवाणी भारती | ७९ |
| ४ श्रीसिद्ध भगवानकी आरती | ८० |
| | |

संपादकीय निवेदन

श्री परमपूज्य अजिका श्री ज्ञानमती जीने गतवर्ष संघसहित चातुर्मास हैदराबाद नगरांतर्गत केसरबागमें किया था। चातुर्मासमें बडी प्रभावना हुई। श्री क्षुर अभयमती जीका दीक्षा विद्यान, अनेक व्रतविद्यान, पूजा अनुष्ठान आदि कार्यक्रमों से केसरबागमें धार्मिकवातावरणकी अपूर्व शोभा आगई थी। समी श्रावक-श्राविकाये संवसेवा, सयमाराधना, व्रतानुष्ठान आदिमें रत रहते थे। ऋषिमंडल, सिद्धचक्र आदि महान् विद्यान भी हुए। महाशांतिनाथ विद्यान तो अनेक बार हुआ, पूष्य माताजीका उपदेश सदा होता था। माताजी स्वयं विदुषी एवं संयमशील तपस्विनी है।

भाद्रपद पर्वमें हमें भी हैवराबाद समाजने बुला लिया था। प्रतिनिन्य दो बार हमारा प्रवचन होता था, भाद्रपदपर्वमें अनेक श्रावक श्राविकावोंने व्रत उपवास आदि किये थे, बडी ही प्रभावना हुई।

श्री सी. वसंतीबाई मांगीलालजी

हैदराबादके प्रसिद्ध पहाडचा घरानेके होनहार धारिक युवकरत श्री मांगीलालजी पहाडियाकी धमंपरनी सी. वसंती बाईजीने दशलक्षणके १० उपवास बहुत ही उल्लास व शांतिके साथ किया था। आपके इस अनुष्ठानमें आपके सारे परिवारने बहुतही आनंदके साथ सहयोग दिया था। आपके पिता श्री धमंनिष्ठ गुरुभक्त शेठ सुवालालजी वरंगलवाले भी संघसेवामे कई महिनेतक रत थे। श्री मांगीलालजी पहाडियाके सहोदर,

पूज्य माताजी, बंबुगण आदि समी धर्मप्रेमी सज्जन हे । सी वसतीबाईके इस महान् घामिक अनुष्ठानके उपलक्ष्यमें भाई । मांगीलाल जीने हजारो साधिम भाईयोंको भोजन कराकर वात्सल्य व्यक्त किया था और प्रभावना भी बांटी गई थी। इस तरह हैदराबादमें अपूर्व प्रभावना हुई।

अनुकरणीय शास्त्रदान.

इस व्रतोद्यापनकी स्मृति चिरकालतक बनी रहे, इस हेतुसे उस समय एक शास्त्रदानका भी संकल्प किया गया था। उनकी इच्छानुसार सर्व श्रावकोंको उपयोग हो इस दृष्टिसे इस प्रस्तुत ग्रंथका प्रकाशन किया गया है।

इसमें पंचामृताभिषेक, शांतिमंत्र, महाशांतिमंत्र, नित्य-पूजा, देव वंदनादिके साथ आचार्यं पूजादि विधानोंका सकलन किया गया है। इसका नित्य पूजा करनेवाले धार्मिक प्रवृत्तिके श्रावकोंको यथेष्ठ उपयोग होगा।

श्री मांगीलालजी सारिवक व उदार प्रकृतिके सज्जन है, जन्होने अपनी धर्मपत्नीके इस पुण्य अनुष्ठानमें प्रोत्साहन ही नहीं दिया है, अपितु स्वयं भी असंख्य पुण्यका उनार्जन किया है और अन्य असंख्य भन्योंको भी पुण्योपार्जनका साधन उप-स्थित किया है, अतः वे धन्यवादके पात्र हैं।

. कल्याणभवन सोलापूर. १–६–६५ विनीत

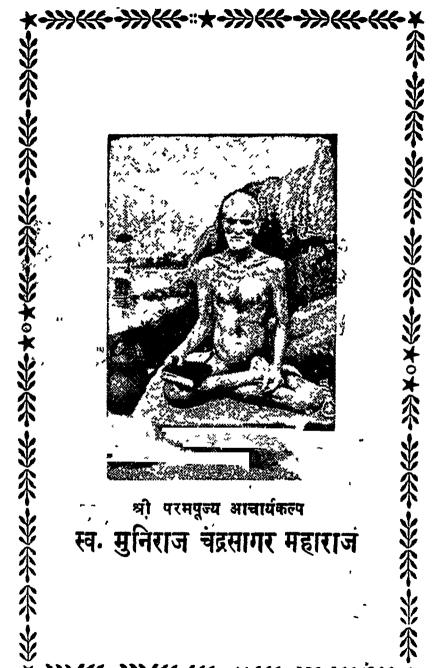
वर्धमान पार्श्वनाथ शास्त्री (विद्यावाचस्पति,व्याख्यानकेसरी विद्यालंकार, समाजरत्न आदि) *SASSA*

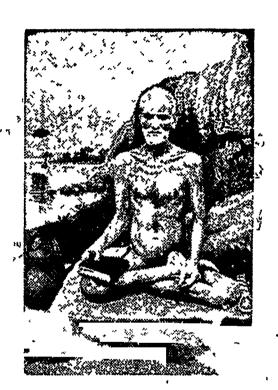
みんとうからからから

さかかかん



श्री. परमपूज्य चारित्रवक्रवर्ति स्व. आचार्य शांतिसागर महाराज カメナメンスとうろう





श्री परमपूज्य आचार्यकल्प स्व. मुनिराज चंद्रसागर महाराज

₭₭∙>>>₭÷₭₭÷



ंश्री वीतरागय नमः

पंचामृताभिषेक पाठ एवं

आचार्य शांतिसागर आदि महाराजोंकी पूजन

तिलक करने की विधि

जलस्तान, मत्रम्नान, व्रतस्तान, रूप तीन प्रकारके स्नानके बाद तिलक लगाकर पूजन करे।

तिलक लगानेका मंत्र

ओंन्हों णमो अरहंताणं रक्ष २ स्वाहा-ललाटे ओंन्हीं णमो सिद्धाणं रक्ष २ स्वाहा-न्हदये ओंन्ह्रं णमो आइरियाणं रक्ष२ स्वाहादक्षिणभुजे ओंन्हों णमो उवज्झा गणं रक्ष २ स्वाहावामभुजे ओंन्हः णमोलोये सन्वसाहूणं रक्ष २ स्वाहा-कंठे

₹8 €

रयणत्तयंच वदे चोवीस जिणंच सन्वदा वंदे पंच गुरुणांच वंदे चारण चरणं सदा वंदे.

अथ पूजामुख्विधिः

स्नानानुस्नानगृद्धो विवृतसितपुष्ठौतान्तरीयोत्तरीयः। कृत्वोपस्पर्शनादीन्यय जिनगृहमुद्धादितश्रीकपाटम् ॥ सानदः संविशामि त्रिजगदित्रपति श्रीजिनाराधनाय ॥ (इति प्रसालितपादः सन् श्रीविमानं प्राविशेत्) चतुर्दिक्षु प्यक् वलृत्त त्र्यावनंकिशिनितः। त्रिःपरित्यानतो जैनगहमन्तिविशाम्यहं ॥२॥ बृष्ट जिनेन्द्रभवन भवतापहारि, मन्यात्मनां विमवमभव प्रिहेतुः । दुग्याब्यिकनधवल ज्यलक्टकोहि नद्धध्यजप्रकरराजिविराजमानं ॥३॥ दृष्टं घाम रसायन्ष्य महो दृष्ट निद्योनां पदं, दृष्टं सिद्धरसस्य सद्म सदनं दृष्टं च चिन्तामणेः किंदृष्टरणवानुषिङकफलंरेक्मिमयाद्य ध्रुवं । टृ^{ट्र} मुबतिवशहमण्डलगृहं दृष्टे जिनभीगृहे ॥ ४॥ जयित सुरतरेन्द्र श्रीसुघानिझेरिण्याः। कुलधरणिधरोऽय जैनचैत्याभिरामः ॥ प्रविपुलफल्धमनि।कहाग्रप्रवाल-प्रवरशिखरशुभ्मत्केतनः श्रीनिकेतः॥ ५॥

श्रियः पदं जिगिविषतां मनीषिणां, तनूभृतामतनुनिमित्तमृत्तमम् । जिनेक्वरप्रतिङ्घतिषुण्यकेतन-

प्रदक्षिणीकरणमिद पुनातु नः ॥ ६ ॥ इति त्रिभुवनगुरुभवनं त्रिःपरित्याभिमुखमुपगतो भगवन्तमभिवन्देत् ॥

(उपर्युक्त स्तोत्रको बोलते हुगे चैत्यालयको तीन
प्रदक्षिणा देकर ॐ इहीं इह च्हु णिसिहि २ स्वाहा । कहते हुगे
(इग्यन्त: प्रविशत्) भीतर प्रवेश करे।)
भगवानको नमन्कार करके हाथ धोकर ईग्रापथशुद्धि करे।
ॐ इहीं अमुजर सुजर स्वाहा। (हस्त्रक्षालनमंत्र:)

ईर्यापथ शुद्धिः—

यिष्ठकमामि भते । इरियाविहय ए विराहणाए अणागुत्ते, आइगमणे णिग्गमणे, ठाणे, गमणे चंकमणं, पाणुग्गमणे, वीजुग्गमणे हिरिदुग्गमणे उच्चार पस्सवण-खेल-सिहाण वियिष्ठ पदद्वाविषयाए जे जीवा एइन्दिया वा वे इन्दिया वा, ते इन्दिया वा, चर्डार-विया वा पाँचिदिया वा, णे लिलदा वा पेलिलदा वा, संघद्विदावा संघिदिदा वा परिदा वदा वा, किरिच्छिदा वा, लेसिदा वा, छिदिदा वा, गिदिदा वा, ठाणदो वा ठाणचंकमणदो वा, तस्स

उत्तरगुणं, तस्स पायछित्त कारणं तस्स विसोहीकरणं, जाव अरहंताणं भयवताण णमोकारं पज्जुवासं करोमि ताव कायं पावकम्मं दुच्चरियं वोस्सारामि ।

(णमो अरिहताणं इःयादि ९ जाप्य)

आलोचना-

ईर्यापथे प्रचलिताद्य मया प्रमादा-

देकेन्द्रियप्रमुखनीवनिकायशञा ।

निवंतिता यदि भवेदयुगांतरेक्षा

मिथ्या तदस्तु दुरितं गुरुमिततो मे ॥ १ ॥

इच्छामि भते इरियार्वाह्यम्स आल चेउं पुरुष्ठत्रत्-विखणपिच्छमचर्डादसविदिसासु विहरमाणेण जुगंतरदिद्विणा भव्वेण दट्टव्वा । पमाददं सेण डवडवचि याए पाणभूदजीव-सत्ताण उवघादो कदो वा कारिदो वा कीरंतो वा सम-णुमण्णिदो तस्स मिच्छा मे दुक्कड ।

> ॐ =हीं क्वीं भूः शुद्धचतु स्वाहा। (बैठने की जगह पानी छिडके)

ॐ हीं क्ष्वीं आसन निक्षिपानि स्वाहा।

(आसन विछावे)

ॐ न्हीं न्हचुं न्हचुं विसिहि आसने उपविशामि स्वाहा (आसन पर बंठे)

ॐ न्हीं मीनिन्यताय स्वाहा (इति मीनं गृण्हीयात्) मीनले (पूजा पाठके सिवा अन्य बातें न करनेका नाम मीन है) ॐ न्हां न्हीं न्हू न्हीं न्हू: नमोऽहंते श्रीमते पी श्वतरजलेन पात्रशृद्धि पूजाद्रस्यशृद्धि च करोमि स्वाहा। (पवित्र जल पूजा के बतंन और द्रव्यपर छिडके)

सकलीकरण दिग्बंधनादि

जिनेंद्रसरणांग्वुजद्वयसमर्चनाथं मया। समस्तदुरितापहृद्वनवस्त्रमृद्घाटचते॥

अद्याभवत्सफलता नयनद्वयस्य देव ! त्वदीय चरणाम्बुखवीक्षणेत अद्य त्रिलोकतिलक प्रतिभासते मे समारवारिधिरयमाचुलुकप्रपाण भगवन्! नमोस्तु ते एषोऽह जिनन्द्र पूजाबन्दनां करोमि

अय सामायिकस्वीकारः॥

जयन्ति दूरमुन्मकतगनागमपरिश्रमाः । संसारिववरोत्तारते र्थभूता जिनक्रमाः ॥१॥ नमोऽस्तु धूतपापेभ्यः सिद्धभ्यः ऋषिपरिष । । सामाधिक प्रवश्चेहं भवभागणसूदनं ॥२॥ साम्य मे सर्वभूतेषु वैर मम न केनिचित्। आशाः सर्वाः परित्यज्य समाधिमहामाश्रमे ॥

> अथ फुन्यविज्ञापनी--च्या प्रशासन

नमोस्तु भगवन् ! प्रसीदतु प्रभुपादाः बंदिष्येद्धं । एषोऽह तायच्य सर्वसायद्ययोगाद्धिरतोऽस्मि ।। अय पौर्वान्हिक जिनेन्द्र पूजा धन्दमयां पूर्वाश्वावितुक्तमेण सकलकर्मक्षयार्थं भाषपूजाबन्दनास्तयसमेतं श्रीमत्तिद्धभवित-कायोत्सर्गं करोम्यहं ।

सामाथिक दंडक

णमो अरहंतण णमो सिद्धा गं (१) णमो आइरियाणं णमो उवज्झायाण (२) णमो लें!ए सब्द साहूणं.

चतारि मंगल-अरहत मगल, सिद्ध मंगल, साहू मंगलं, केविलण्णतो घम्मो मगल। चतारि लोगुत्तमा, अरहंत लोगुत्तमा, सिद्ध लोगुत्तमा, साहू लोगुत्तना केविल पण्णतो धम्मो लोगुतमा। चतारि सरण पव्यक्तामि, अरहंत सरणं पव्यक्तामि, निद्धनरण पञ्चक्तामि, साहू सरण पवर्जामि, केविल पण्णतो घम्मो सरणं पवर्जामि.

जाव अरहंसाण भयवताण पज्ज्ञुवासं करेमि तावकालं पावकम्मं दुच्चरिय चीस्तरामि ।

(नी वार जाप्य)

चतुर्विशतिस्तव

थोस्सामि हं जिणवरे तित्थयरे केवली अणंत जिणे। णरपवरलोयमहिए विहुयरयमले महप्पणो।। २।। लोयम्तुज्जोययरे धम्म तित्थकरे जिणे घंरे अरहते कित्तिस्से चडवीसं चेव केवलिणो॥ २॥

सिद्धभिनत

सविति ण्यसिद्धे संजमितिद्धे चरित्तसिद्धे य णाणम्मि वसणम्मि य सिद्धे सिरसा णमशामि॥

इच्छामि मंते ! सिद्धमत्तिकाउरसग्गो कभो तस्सालोचेड

सम्मणाण सम्मदंसण सम्मचित्त गुत्ताण अह वहकम्ममुक्ताणं उड्ढलोयमत्थयम्मि प्रदृष्टियाण तबसिद्धाणं णयमिद्धागं चरित्त ने सिद्धाणं अवीवाणागदवहुमाणकालत्तयमिद्धाणं सव्वसिद्धाणं णिण्चकालं अचेनि पूजेनि वदामि णमसामि दुवलवल्लभो कम्मक्लओ बोहि जाहो सुगद्दगमण समाहि मरणं जिणगुणसंपत्ति हो उम्हनं।

ॐही सिद्ध परमेष्ठिने नमः अधै इति पूजामुखिक्धिः

->>→>\\\ @<<<<<<<

अथ पंचामताभिषेक पाठ

पंच नमस्कार मंत्र

आर्या छदः

णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आइरियाणं णमो उवज्ञायाणं, णमो लोए सब्ब साहूणं।

मंगलाष्टकः

श्रीमसम्प्रसुरासुरेन्द्रमुकुटप्रद्योतरत्नप्रभा-मास्यत्पादनखेदवः प्रवचनांभौधाववस्थायिनः । ये सर्वे जिनसिद्धसूर्यनुगतान्ते माठकाः साधवः स्तुत्या योगिननेश्च पचगुरवः कुर्वन्तु (मे) ते मंगलम् ॥१॥

सम्यदग्दर्शनबोधवृत्तमभलं रत्नत्रयं पावनं। मुक्तिर्श्व नगराधिनायजिनपरयुक्तीपवर्गप्रदः । धर्मः सुवितसुधा च चैःयमिखलं चैःयारुयं दयारुयं। प्रोक्तं च त्रिविधं चतुर्विधममी कुर्वेन्तु मे (ते) मंगलम् ॥२॥ नाभेयादिजिनाधिपास्त्रिभुवनस्याताश्चतुर्विशतिः, भीमंती भग्तेश्वरप्रमृतायो ये चित्रणी द्वादश । बे विष्णु रतिविष्णुलांगलघराः सप्तोत्तरा विश्वति-स्त्रेकात्ये प्रथितास्त्रिषिटिपुरुषाः कुर्वन्तु मे (ते) मंगलम् ॥३॥ देय्योऽष्टो च जयादिका द्विगुणिता विद्यादिका देवताः। श्रीतीर्थं करमातृकाश्च जनका यक्षाश्च यक्ष्यस्तथा। द्वात्रिशित्यदशाधिपास्तिथिसुरा दिक्कन्यकाञ्चाष्ट्रधा। दिक्पाला दश चेत्यमी सुरगणाः कुर्वन्तु मे (ते) मंगलम् ॥४॥ बे सर्वोषश्रऋद्धयः सुनपसी वृद्धिगताः पच ये। ब बाष्टांगमहानिमित्तकुशला येष्टाविधाश्वरणाः । पंचजानघरास्त्रयोपि बलिनो ये बुद्धिऋद्धीश्वराः। सप्तेते सकलाचिता गणभृतः कुवंन्तु मे (ते) मंगलम् ॥५॥ 🕏 लासे वृषमस्य निर्वृतिमही वीरस्य पावापुरे । चंपायां वसुपूज्यसज्जिनपतेः सम्मेदशैलेऽहंता । जेषाणामिव चोर्जयंतशिखरे नेमीश्वरस्यार्वतो । निर्वादणायनयः प्रसिद्धविभवाः कुर्वन्तुं मे (ते) मंगलम् ॥६॥

जब्रात्मिलवित्यवासिक्यु तथा वक्षाररूप्यद्विषु ।
इत्वाकारिगरी च कुण्डलनगे द्वीपे च नन्दी इवरे
शेले ये मनुजोत्तरे जिनगृहाः कुर्वन्तु मे (ते) मंगलम् ।।।।।।
यो गर्भावतरोत्सवो भगवतां जन्माभिषेकोत्सवो
यो जातः परिनिष्क्रमेण विभवो यः केवल्ज्ञानभाक् ।
यः कैवल्यपुरंप्रवेशमहिमा सभावितः स्वर्गिभिः ।
कल्यणानि च तानि पंच सततं कुर्वन्तु मे (ते) मंगलम् ।।८।।
इत्यं श्रीजिनमंगलाष्टकिमद सौमाग्यसंपत्प्रदं
कल्याणेषु महोत्सवेषु सुध्ययन्तीर्थकराणामुषः ।
ये श्रुण्वन्ति पठन्ति तैश्च सुजनैधमिर्थकामान्विता
स्वसीराश्रयते व्ययाय हिता निर्वाण्डक्षमीरिष ।।९।।

- इति मंगर्लाष्ट्रकम् -श्रीमिष्जिनेन्द्रमिबद्य जग-त्रयेश । स्याद्व दनायक्रमनन्तचतुष्टयाहँम् ॥

श्रीमूलसंघसुदृशां सुकृतंकहेतु – जैनन्द्रयज्ञृविविरेष मयाभ्यधायि ॥

(इस इलोकको पढकर भगवान् के चरणों में पुष्पांजली अर्पण करना श्रीमन्मन्दरमुन्दरे शुचिजलेखातै: सद्भक्षितै:।

पैठं मुनितवरं निधाय रचितं न्वत्पादपद्मस्रजः 11 इन्द्रोऽहं निजभूषणार्थकिमिदं यज्ञोपवे तं देखे ।

मृद्राकंकणशेखराण्यपि तथा जैनाभिषेकोत्सवे ॥ (इस श्लोकको पढककर भगवान के चरणों में पुर्वाजलि अर्पक करना और यज्ञोपवीत तथा साम्वण धारण करनाचाहिये) (तिलक लगाने का रलोक)

सौगन्ध्यसंगतमञ्जूतसञ्जतेन,
संध्यमानिमत्र गंधमिनश्चमादौ ।
आरोप्यानि वित्रुधश्वरवृत्यवन्य
पादारविश्वमिवन्य जिनोत्तमानाम् ॥

(अभिषेक के लिये भूमिप्रशालन करने का वलोक)

ये संति केविदिह दिव्यकुलप्रसूता नागाः प्रम्तदलदर्पपुना विद्योधाः। सरक्षणार्थममृतेन शुभेन तेषां।

प्रशालवानि पुरतः स्नपनस्य भूनिम

(अभिषेक के लिये पोठाक्षालन करने का दलोक)

क्षीराणंवम्य पयसां धृचिनिः प्रवाहैः । प्रक्षालित सुरवरैर्यदनेकवारम् । अत्युद्धमृद्धतमहं जिनवादपीठं ।

प्रक्षालयानि भवसंभवतापहारि ॥

(पीठार श्रीकार लिखनेका क्लोक)

श्रीशारदानुम्खनिगंतबीजवर्णम् । श्रीमगलीकवरसर्वजनस्य नित्यम् ॥

भीमस्वय क्षपति तस्य विनाशविष्नम् । श्रीकारवर्णलिखितं जिनभद्रपीठे ।।

(दश दिक्पाल आन्हान करनेका ब्लोक) इंद्राग्निदण्डधरनैऋतेषाशपाणी, वायुत्तरेशशक्षिमौलिफणं नद्र स्ट्राः। क्षागत्य यूयमिह सानुचराः सचिन्हाः, स्वं स्व प्रतीच्छत बलि जिनपाविषके। (नीचे लिखे मंत्रों हो पढ़ कर दि हालों हो अर्व चढावे) 🕉 आं कौं -हीं इन्द्र आगच्छ आगच्छ इन्द्राय स्वाहा । 🕉 आं क्रौं -हीं अग्ने आगच्छ आगच्छ अग्नपे स्वाहा 🕫 ॐ आं कौं -हीं यन आगच्छ आगच्छ यनाय स्वाहा।. 🕉 आं क्रौं ऱ्हीं नैऋत आगच्छ आगच्छ नैऋय स्वाहा। ॐ आं क्रौं -हीं वरुण आगच्छ २ वरुणाय स्वाहा। ॐ आं ऋौं ऱ्हीं पवन आगच्छ २ पवनाय स्वाहा। 👺 आं क्रौं -हीं कुबर आगच्छ २ कुबराय स्वाहा। 🕉 आं कौ न्हीं एशान आगच्छ २ ऐशानाय स्वाहः। 🕉 आं ऋौं ऱ्हीं धरणेंद्र आगच्छ २ धरणींद्राय स्वाहा । ॐ आं क्रौं ऱ्हीं सोम आगऱ्छ २ सोमाय स्व.हा । (इति दश दिक्पाल अर्घ) नाथ ! त्रिलोकमहिताय दश प्रकार-धर्मा बुवुब्टिवरिषिक्तजगत्त्रयाय । ं अर्धं महार्घंगुणग्रतमहाणेवाय । तुभ्य ददामि कुमुमेविशदाक्षतैश्व ॥

(श्री अरहन्तभगवानको अर्थ च्ढावे) जन्मोत्सवादि समयेषु यदीयुर्क ति। सेंद्राः सुराऽप्रमदभारस्ताः स्तुवन्ति ॥ तस्याप्रतो जिनपतेः परया विशुद्धधा । पुढेंपाँजिल मलंयजाद्रीमुपाक्षिपेऽहम् ॥ 🗕 इति पुष्पांजलि: 🗕 बध्युज्ज्वलाक्षतमनीहर्गपुष्पदीपैः पात्रापितं प्रतिदिनं महतादरेण।। त्रेलोक्यमंगलसुखालय! कामादाह-मारातिकं तब विभारेवतारयामि ॥ - इति मंगलआरती अवतरण -यं पांडुकामलेशिलागतमादिदेव--मस्तावयन्युरवराः सुरक्षैलंपूष्टिन ॥ कल्याणमीष्सुरहमक्षतंतोयपुष्पैः सन्भावयामि पुर एव तदीयविबम् ॥ (इति श्रीजिन्धिं स्थापनम्) सत्पल्लवःचितपुखान् कलघोतरोप्य--ताम्रारक्टघटिनान् पद्यासा सुपूर्णान् ॥ संवाह्यतामिव गतांश्चतुरः समुद्रान् । संम्यापयामि कलशान् जिनवेदिकाते ॥

- इति कलशस्यापन् -

आभि: पुण्याभिरेद्भिः परिमलब्हुलेनामुना चन्दनेन, श्रीदृवपेयेरमीभिः श्रुचित्रदक्षचयेरुद्गमेरेभिरुद्घैः। हृद्येरेभिनिवेद्यैपंखभवनमिमेदीपयद्भिः प्रद पैः, ध्पैः प्राथोभिरेभिः पृथुभिरेपि फलेरेभिरोशं यजामि ॥

दूरावनम्रसुरंनाथिकरोटकोटो-

- इति अर्घम् -

पंचामृताभिषेक

संख्यतरत्नि । प्रकृष्टे प्रश्वेदताममलम्बतमि प्रकृष्टे प्रिक्त्या जलै जिनपति बहुवाभिषिचे ॥
ॐ न्हीं श्रीमंतं भगवंतं कृपालसंग वृषभादिवर्धमानांत
चतुर्विशतिती र्थंङ्करपरमदेवं आद्यानाम् आद्ये जम्बू द्विपे भरतक्षेत्र
आयों खण्डे देशे नाम्नि नंगरे एतद् जिनचित्या लये सं० मासोत्तमे मासे पक्षे तिथी वासरे
पीर्वितिकसम्ये मृनिआयिकाशांवकशाविकानाम् संकल कर्म क्षयार्थं जलेनाभिष्वे नमः।

इति जलस्मपनम् ।
सुस्मिग्धैर्नवनालिकेरफलजैराम्त्राविजातेग्तथा ।
पुण्ड्रेक्ष्वादिममृद्भवैश्च गुरुभिः पापापहैरंजसा ॥
पीयूषद्रविन्नमंद्भवैश्च गुरुभिः पापापहैरंजसा ॥
पीयूषद्रविन्नमंद्भरसैः सज्ज्ञानसंप्राप्तये ।
सुस्वादैरमलैरस्रं जिन्नविभुं भवस्थानघं रनापये ॥
कि न्हीं इति रसस्मपनम् ।

न।लिकेरजलैः स्वच्छैः शोनैः पूर्तर्मनोहरैः स्नानिकयां कृत।यस्य विदये विश्वदर्शिनः ॥

ॐ न्हीं

इति नालिकेररसस्न गनम्।

सुपक्वैः कनकच्छायैः सामोदैर्मोदकादिभिः। सहकाररसैः स्नानं कुर्नः शर्नेकसद्मनः।

ॐ =हीं

इति आम्ररसस्न्पनम्।

मुक्त्यंगनानमंविके यंमाणैः विष्टार्थकर्पूररजोविलाहै ॥ माधुर्यधुर्यैर्वरक्षकरौधैर्मक्त्या जिनस्य स्नपनं करोमि ॥

ॐ न्हीं

इति शर्करास्नपनम्।

भरत्या ललाटतदेटशनिवेशितोच्चं:

हम्तेश्च्युताः सुरवराऽसुमर्त्यरनार्थः।

तत्कालपीलितमहेक्षुरसस्य घारा

सद्यः पुनातु जिनविम्बगतंत्र युष्मान् ॥

ॐ न्हीं

इति इक्षुरसस्नपनम्।

उत्कृष्टवर्णनवहेमरसाभिराम-

देहप्रमावलयसंगमलुप्तदोप्तिम् ॥

घारां घृतस्य शुभगन्त्रगुणानुमेयां

बन्देऽहैतां सुरभिसंस्नपनोपशुक्ताम् ॥

कं न्ही

इति घृतस्नपनम्।

सम्पूर्णशारदशशांकमरीविज्ञाल-स्पन्देरिवात्मयशसामिव सुप्रवाहै: ।। स्रोरेजिनाः शुनितरंरिभिषिच्यमानाः सम्पादयन्तु मम चित्तसमीहितानि ॥

क्षें हीं

इति दुग्धस्नपनम् ।

दुग्धाब्धिबी विचयसंचितफेनर।शि—ं
पांदुत्वकांतिमवशारयनामतीव ॥
दश्नां गता जिनवतेः प्रतिमां सुधारा
सम्पद्यतां सपदि वाञ्च्छितसिद्धये वः ॥

ॐ ऱ्ही

इति दिशस्नपनम

संस्तापितस्य घृतदुग्धधीक्षुवाहैः सर्वाभिरोषधिभिरहेत उज्ज्वलाभिः। उद्घतितस्य विद्धाप्यभिषकमेला-कालेयकुंकुमरसोत्कटवारिपूरैः॥

ॐ न्हीं

इति सर्वे।षिक्तपनम् ।

कर्पूरबूलिमिलितैः घनसारपंकः
सम्मिश्रितः कमलतन्दुलिपडिविधैः ।
उद्वर्तनं भगवती वितनोमि देहस्नेहोपलेपकलनापरिलोपनाय ॥
इति चन्दनादिना उद्वर्तनं करोमि स्वाहा ।

संशुद्धशुद्धचा परया विशुद्धचा, कर्पुरसम्मिश्रितचन्दनेन।

जिन्द्रदेवासुरपुरपवृद्धिः विलेपन चारु करोमि भवाया ।। इति चन्दनादि लेपनं करोमि स्वाहा। बासन्तिकाजातिशिरीययुग्वे-वैधुकवृन्देरिव चम्पकार्यः। पुःपैरने हैरलि मिहुताग्रैः, श्रीमज्जिनं दां जियुगं यजेऽहं।। इति पुष्पवृद्धि करोमि स्वाहा। इप्टेमेनोरयशनीरय भरवपुंतां पूर्णः मुबर्गत्र लक्षीनितिलैवैसानै: । र्मसारसागरविलंघन?तुसेतु-

在哥

इति नतु.कोणकरुणस्नपनम् ।

इय्यैरमस्ययमसारसनुःसमार्थः-रामी:बाधितमसन्तरियंतरालेः नियोष्ट्रीय प्रयमा जिनपुरुगवानां त्रे होरपपायनमहं स्नपने करोमि ॥

माप्लावये त्रिभुकवने ।ति जिनेद्रम्

口切

इति गुगन्धितत्रलस्नपनम्।

अय शांतिमंत्र प्रारम्यते।

→>>>>®<<<><<<

ॐ नमः सिद्धेभ्यः । श्री वीतरागाय नमः ॐ नमोऽ-हिते भगवते, श्रीमते पाइवंतीर्थंकराय द्वादशगणपरवेष्ठिताय ज्ञुक्लध्यानपिवत्राय, सर्वज्ञाय, स्वयभुत्रे, सिद्धाय, बुद्धाय, पर-मात्मने, परमसुखाय, त्रेलोक्यमहीव्याप्ताय, अनन्तसंसारचऋपरि-मर्दनाय, अनन्तदर्शनाय, अनन्तत्रीयीय, अनन्तमुखाय, सःयज्ञम्हणे, धरणेंद्रफणामण्ड नमिडताय ऋष्यायिकात्रावकश्राविकाप्रमुख-चतुःसंघोष्मंविनाशनाय, घातिकर्मविनाशनाय, अघातिकर्म-विनाशनाय, अपवायं छित्रि छिधि मित्रि मिधि, मृत्युं छिधि छिधि मिधि मित्रि, अतिकामं छिवि छिवि मिधि २। रतिकाम छिधि २ मिधि २। कोव छिधि २ मिधि २। अग्ति छिधि २ मिधि २। सर्वेशुत्रुं छिन्नि २ मिधि २। सर्वोपसर्गं छिधि २। सर्वविष्टनं छिन्दि र निधि र । सर्वभय छिधि र्निधिर । सर्वचीरमय छिघि २ मिधि २। सर्वदुष्टभयं छिबि २ मित्रि २। सर्वम्ग-मयं छिधि २ मिधि २। सर्वमात्मचक्रम्य छिधि भिधि २। सर्वरपमन्त्रं छिबि २ मिथि २। सर्वगूलरोगं छिबि २ भिधि २। सर्वक्षयरोगं छिधि २ मिधि २। सर्वकुष्ठरोगं छिधि २ भिधि२। सर्वेक्रररोगं छिधि २ भिधि २ । सर्वेनरमारी छिधि २ भिधि।

क भुवर्शनमहाराज चक्रविक्रमतेत्रोबन्द्रीर्घविधेर्यशिति कृष गुरु । सवजनाननत्वन कृष गुरु । सर्वभय्यानवनं गुरु बुरु । सर्वभो हुरानन्दनं गुरु गुरु । सर्वप्रामनगर संदक्षदेदमद्वपस नद्रोणमुणस्याहानन्दन गुरु २ । सर्वन्तं फानन्दनं गुरु कुरु । सर्व बेगानन्दन गुरु कुरु । सर्वप्रमानानन्दन कुरु कुरु । सर्वदुःग हन, हन, दह, दह, प्या, प्या, कुट, कुट, दी झ्रा गीझ ।

यत्मुख त्रिषु लोकेषु व्यादिव्यंसनवित्रसं । समयं क्षेममारीग्यं ग्यम्तिरम्तु विद्यीयते ॥

शिवमम्तु । कुलगाव्धनग्रान्यं सदास्तु चन्त्रवमयामुपूत्रय-मिलवर्द्धमान पुष्पदन्त ही त रु मुनिसुग्रत नेमिनाच पाइवैनाच इत्येष्यो नमः । इत्यनेन मन्त्रेण नवप्रहायं गन्धोवकधारावर्षणम् । , ओं नमः शांति जनेशिने

अथ महाशांतिमंत्र

→>>→>®<<<<<<<<

शार्द्छ:- श्रीखण्डोद्भवकदमैः सुरुचिरः वर्प्रचूर्णैनितै:।

संभिश्रेरतिगन्धिभनंदनदीकाम।रक्षादिभिः॥

पाथोभिः परिपूरितेन कलझैर्नान्तस्थितैर्नाःमनां ।

शास्त्यर्थं महाशांन्तिमत्रपटलैंदेवं जिन स्नापये ॥ १॥

गद्य:- ॐ कर्पूरकाइमोरागुरु गलयजादिश्चोदव्यामिश्रीत-

गिदतस्वर्णरेणूयमानकजिङ्गलकपुंजिपजिरितैविजितविलसिद्धला-सिनीविलोललोचननीलनीरजजलदपरिपुरितैः परिपुरितसकल

जगद्घाणविवरबन्धुरसौगन्द्ध्यै: ॥

वसंत-अन्धीकृतालिभिरभिष्टुत हेपकुम्म-।

संघारितैविजितदिग्द्वियदानगन्वै-।।

र्बन्धुप्रभुं भवमृतां हतघाति बन्द्रम् ।

गन्धौदर्काजनपति स्नपयामि ज्ञान्त्ये ॥ २ ॥

ॐ -हीं श्री कर्ली ऐं अई वं म हं सं तं प वं २ म २ हं २ सं २ तं २ पं २ झं २ झ्वीं क्ष्वीं द्वां २ द्वीं २ द्वावय २ नमो-ऽईते भगवते श्रीमते ॐ -हीं क्षों (+ देवदत्त नामधेयस्य) पापं खण्ड २ हत २ दह २ पच २ पाचय २ कुट २ जी झं

⁺ यहां महाशांति कर। नेवाले व्यक्तिका नाम लेवें।

🕉 निखिलभुवनमवनमगलोभूतजिनपतिसवन समयस-यरमभिनवकर्पूरकालागरुकुं कुमहरिचन्दनाद्यनेक सुगन्ति बन्धुरगन्धद्रव्यसम्भारसम्बन्ध्यन्धुरम्खिलदिगन्तराल -व्याप्तसौरभातिशयसमाकृष्टसमदसामजकपोलतलविगलित नद--मुदितमधुकरनिकराहंत्परमेश्वरपवित्रतरगात्रस्पर्शंनमात्रपवित्री-भूत - भगवदिदं गन्त्रोद इद्यारावर्षभशेषह्वैनिवन्त्रनं भवतु (० देवःस नामधेयस्य) शांतिः करोतु कान्तिमाविष्क रोतु । कल्याणं प्रादुःकरोतु । सीमाग्यं सन्तनोतु । आरोग्य-मातनोतु । सम्पदं सम्पादयतु । विषदमवसादयतु । यशो विका-सयतु । मनः प्रसादयतु । आयुद्रीघयतु । श्रियं श्लाघयतु । शुद्धि विशुद्धयतु । बुद्धि विवर्धयतु । श्रेयः पुष्णातु । प्रत्यवायं मुष्णातु अनिभमतं निवारयतु । मनोरथं परिपूरयतु । परमोत्सवकार-णिवदं। परममंगलिमदं। परमप।वनिमदं स्वस्त्यस्तु नः। स्वस्त्यस्तु वः । इवीं क्वीं हं सः असिमाउसा स्वाहा ।।

^{#,} ०, - यहां जिसके लिए शांति करे उनका नाम लेवे।

विनाशनाम अब्दमहाप्राप्तिहार्यसहिताय चतुन्त्रिश्र विनाशनाम अब्दमहाप्राप्तिहार्यसहिताय चतुन्त्रिश्र वितिश्य। त्राय। अनन्तदर्शुनज्ञानवीर्यसुखात्मकाय। अब्दादशदोषरहितःय। पच्चमहाकत्याणसम्पूर्णाय। नवकेवलिधसमिनवताय। दशिवशे-चगसयुक्ताय। देवाधिदेवाय। धर्मचक्राधीक्वराय। धर्मोपदेश-नक्ष्य । चमरवैरोचनाच्युतेन्द्र प्रभृतीन्द्र शतेन मेक्गिरिशिखर-शेवरीमृतपाण्डुकशिलातलेन गन्धोदकपरिरिपूरितानेक-विचित्र मिन्यमंगलकलशेरिपिधिवतिमदानीमहं त्रेलोक्येश्वरमई-सामेविक्रनमिधवेत्रयामि हं झह्वी क्ष्वी हं सः द्रांद्री ए वहं नहीं क्ली ब्लूं द्रांद्री द्रावय २ स्वाहा। (आगके मत्रोमे क्षमसे जलगंधादि अब्दिवधद्रक्य अर्पण करें)

ॐ न्हीं श्रातादकप्रदानेन श्रीत्लो भगवान् प्रसिदंतु वः ।
श्रीता आपः पान्तु । शिवमाग्ङ्ल्यन्तु श्रीमदस्तु वः ॥ १ ॥
ॐ गन्त्रोदकप्रदानेन अभिनन्दनो भगवान् प्रसीदतु । गन्धाः
पातु । शिवमग्ङल्यन्तु श्रीमदस्तु वः ॥ २ ॥ ॐ अक्षतोदक
प्रदानेन अनतो भगवान् प्रसीदतु वः । अक्षताः पान्तु । शिव—
माग्ङल्यन्तु श्रीमदस्तु वः ॥ ३ ॥ ॐ पुष्पोदकप्रदानेन पुष्पदन्तो
भगवान् प्रस दतु । पुष्पणि पान्तु । शिवमाग्ङल्यतु श्रीमदस्तु
वः ॥ ४ ॥ ॐ नैवेद्यप्रदानेन नेमिनायो भगवान् प्रसीदतु ।
पीयूषपिण्डः पान्तु । शिवमाग्ङल्यन्तु श्रीमदस्तु वः ॥ ५ ॥
ॐ दीपप्रदानेन चन्द्रप्रमो भगवान् प्रसीदतु कर्पूरमाणिक्यदीपाः
पान्तु । शिवमाग्ङल्यन्तु श्रीमदस्तु वः ॥ ६ ॥ धूपप्रदानेन
धर्मनेमिनायो भगवान् प्रसीदतु । गुग्गुलादिदशाग्ङध्याः पांतु ।

शिवमाग्डल्यन्तु श्रीमदम्तु वः ॥ ७ ॥ फलग्रदानेन पार्श्वनाथो भगवान् प्रसोदतु । फ्रमुक - नारिंग - प्रभृतिफल्यानि पान्तु । जिल्ल माग्डल्य तु श्रीमदम्तु वः ॥ ८॥ ॐ अर्हन्तः पान्तु वः । सद्धमं - श्रीबलाय्रारोग्येश्वयाभिनृद्धिरम्तु वः ॥ मिद्धाः पान्तु वः । हृदयनिर्वाण प्रयन्छन्तु वः ॥ आचार्याः पान्तु वः । श्रीतलसीग - ध्यमस्तु वः ॥ उपाध्यायः पन्तु वः । सीमनस्यं चास्तु वः ॥ सर्वसाधवः पम्तु वः । अस्रदानतपोवीयंविज्ञानमस्तु वः ॥ (अगके मंत्रोंसे २४ बार पुष्प अपीण करें)

ॐ वृषमस्वामिनः भेपादपद्मप्रसादात् अष्टिविष्ठकमं विनाश्वानं चास्तु वः ॥ १ ॥ ॐ श्रीमदिजितनायःवामिनः श्रीपादपद्मप्रसादादे बेयशितकं वनु वः ॥ २ ॥ ॐ शम्भवस्वामिनः
श्रीपादपद्मप्रसाद दनंकगुणगण श्वान्तु वः ॥ ३ ॥ ॐ अभिनदनस्वामिनः श्रीपादपद्मप्रसादादिभमतफल प्रयच्छन्तु वः ॥ ४ ॥
ॐ सुमितःवामिनः श्रीपादपद्मप्रसादादमृनं पिवत्रं प्रयच्छन्तु वः
॥ ५ ॥ ॐ पद्मप्रभरवामिनः श्रीपादपद्मप्रसादादमृनं पिवत्रं प्रयच्छन्तु वः
॥ ५ ॥ ॐ पद्मप्रभरवामिनः श्रीपादपद्मप्रसादाद्यां प्रयच्छन्तु
वः ॥ ६ ॥ ॐ सुपद्दंस्वामिनः श्रीपादपद्मप्रसादाद्यां प्रयच्छन्तु
वः ॥ ७ ॥ ॐ श्रीचद्रप्रभस्वामिः श्रीपादपद्मप्रसादाद्यन्द्रकं—
प्रतेत्रोऽस्तु व. ॥ ८ ॥ ॐ प्रुष्यदंगस्वामिनः श्रीपादपद्मप्रसादात्
पुष्प गयकातिश्वोऽस्तु वः ॥ ९ ॥ ॐ श्रीतश्रस्वामिनः श्रीपादपद्मप्रसादादशुमक्षमं मलप्रक्षालनमस्तु वः ॥ १० ॥ ॐ श्रेयांस—
जिनस्नामिनः श्रीपादपद्मप्रादात् श्रेयस्करोऽस्तु वः ॥ ११ ॥

ॐ वासुपूज्यस्वःमिनः श्रीपादपद्मत्रसादःद्रत्नत्रयावासंकरोग्तु दः ॥ १२ ॥ ॐ विमलस्वामिन श्रीपाद रद्य मसादात् सद्धर्मवृद्धिवी चान्तु वः ॥ १३ ॥ ॐ अनन्तनायम्वामिनः ङ्गल्य श्रीपाद गद्मत्रसाददनेकधनाधान्याभिवृद्धिरक्षणमस्तु वः ॥ १४ ॥ 🍑 धर्मनाथस्वामिनः श्रीपदपद्मासादात् द्यर्पप्रचयोऽन्तु वः॥ १५॥ ॐ श्रीमदहुँ-परमेश्वरसर्वज्ञ ररमेष्टिज्ञान्तिनाथस्वामिनः श्रीपाद-पदाप्रसादात् शान्तिकरोऽस्तु वः ॥ १६॥ ॐ कुंथुनाथम्वामिनः श्रीपादपद्मा सदात्तत्रामिवृद्धिकरोऽन्तु वः ।। १७ ॥ ॐ सरिजन स्वामिनः श्रीपादपद्म गसादात् गरम हत्या गपरम्पराऽस्तु वः ॥ १८॥ ॐ मिल्डनाथस्वामिनः श्रीपादपद्मप्रसादाच्छल्यविमोचनं करोऽन्तु वः ॥ १९ ॥ ॐ मुनिसुव्रतस्वामिनः श्रीप दपद्म गसादात्सम्यग्दर्शन चास्तु वः ॥२०॥ॐनिमनथस्वामिनः श्रीपादपद्मत्रसादःसम्यग्ज्ञानं चास्तु वः ॥ २१ ॥ ॐ अरिष्टनेमिस्वरिश्नः श्रीपादपमद् ।सा-दात् अक्षयं चारित्रं ददातु वः ।। २२ ।। ॐ श्रीमःपार्श्वभट्टारक-स्वामिनः श्रीपादपद्मप्रसादात्सर्वविष्टनविनाशनमम्तु वः ॥ २३ ॥ 🥸 श्रीवर्धमानस्वामिनः श्रीपाद्मप्रसादात्सम्यग्दर्शनश्चष्टगुण्-विशिष्ट चास्तु वः ॥ २४॥

श्रीमद्भगवदर्हसर्वज्ञ परमेष्ठी - परम - पवित्र - झांति-भट्टारक स्वानिनः श्रीपादपद्मप्रसादात्सद्धर्मश्रीबलायुरारोग्ये इवर्णाभवृद्धिरस्तु । वृषभायदो महति महाबीर वर्धमान पर्यन्तः परम ते थंकरदेवाइचतुविशितरहंन्तो भगवन्तः सर्वेझाः सर्वेदशिनः सिम्भन्नमनस्का वीतरागद्वेषमोहास्त्रिलोकनाथा स्त्रिलोकमहिता सिम्भन्नमनस्का वीतरागद्वेषमोहास्त्रिलोकनाथा स्त्रिलोकमहिता सिम्भन्नमनस्का जातिजरामरणिव ममुक्ता सकलमन्यजनसः मूहकमलवनसम्बोधनकराः । देवाधिदेवाः । अनेक गुणगणशत—सहस्रालङ्कृतदिव्यदेहधराः । पंचमहाकल्याणाष्ट्रमहाप्रातिहार्य- चतुन्त्रिश्चदिव्यदेहधराः । पंचमहाकल्याणाष्ट्रमहाप्रातिहार्य- चतुन्त्रिश्चदिव्यदेशधराः । पंचमहाकल्याणाष्ट्रमहाप्रातिहार्य- चतुन्त्रिश्चदिव्यसमानमन्यवरपुण्डरोकपरमपुरुषमृकुटतटिनिब्रिशनिव - स्वितिव्यसमानमन्यवरपुण्डरोकपरमपुरुषमृकुटतटिनिब्रिशनिव - स्वितिव्यसमानमन्यवरपुण्डरोकपरमपुरुषमृकुटतटिनिब्रिशनिव - स्वितिव्यसमानमन्यवरपुण्डरोकपरमपुरुषमृकुटतटिनिब्रिशनिव - स्वितिव्यसमानमन्यवरपुण्डरोकपरमपुरुषमृकुटतटिनिब्रिशनिव - स्वितिव्यसमानमन्यवरपुण्डरोकपरमपुरुषमृकुटतटिनिब्रिशनिव - स्वितिव्यसमानमन्यवर्य - स्वितिव्यसमानमन्यवर्य - स्वितिव्यसमानमन्यवर्य - स्वितिव्यक्षम् - स्वितिव्यक्षम् - स्वितिव्यक्षम् - स्वितिव्यक्षमानम् - स्वितिव्यक्षमानम् - स्वितिव्यक्षमानम् - स्वितिव्यक्षमानम् - स्वितिव्यक्षमानमान्यवर्य - स्वितिव्यक्षमानम् - स्वितिविव्यक्षमानम् - स्वितिव्यक्षमानम् - स्वितिव्यक्षमानम् - स्वितिव्यक्षमानम् - स्वितिव्यक्षमानमान्यवर्य - स्वितिव्यक्षमानमान्यवर्य - स्वितिव्यक्षमानमान्यवर्य - स्वितिव्यक्षमानमान्यवर्य - स्वितिव्यक्षमानमान्यवर्य - स्वतिव्यक्षमानमान्यवर्य - स्वितिव्यक्षमानमान्यवर्य - स्वतिव्यक्षमानमान्यवर्य - स्वतिव्यक्षमानमानमान्यवर्य - स्वतिव्यक्षमानमान्यवर्य - स्वतिव्यक्यक्षमानमानमान्यवर्य - स्वतिव्यक्षमानमानमान्यवर्य - स्वतिव्यक

ॐ नृपतिशतसहस्रालङ्कृतसार्वभीमराजाधिराज परमेरवरबल्देवनामुदेवमण्डलीकमहामण्डलीकमहामात्यसेनानाय राज
श्रेिक पुरोहिताधीशकरांजिलनिमतकरकुङ्मलमुकुलालङ्कृतपादपद्माः । कुलिशनालरजत मृणालभन्दारकणिकारातिकुलिगिरि
शिखरशेखरगगनमन्दाकिनीमहान्हदनदनदीशतसहस्रदलकमङ -वासिन्यादि सर्वाभरणभूषिताङ्गसकलमुन्दरीवृन्दवन्दितचारचरण मलयुगलाः ।। ओं आमीषधयः । क्ष्वेलीषधयजल्लीषधयः ।
विश्वषेषधयः।भिनिबोध-सर्वोषधयश्च वः श्रीयन्ताम् २॥ ॐ मतिस्मृति संज्ञाचिन्ताज्ञानिनश्च वः श्रीयन्ताम् २॥ ॐ कोष्ठबृद्धिबीजबृद्धिपदानुसारि ! बृद्धिसिमस्नश्रीमश्चवण्यः वः

बुद्धिसम्मिन्नश्रोत्रश्रवणाश्च व. प्रीयन्तास् २ ॥ ॐ जलचारण-जंबचारणतंतुचारणभूमिचारणपुष्पचारणश्रेणीचारणचतुरङ्गुल-चारणक्षाकाञ्चारणाश्च वः प्रीयन्ताम् २ ॥ ॐ मनोबलिवचोबलि कायबलिनश्च वः प्रीयन्ताम् २ ।। ॐ उग्रतपे व प्तपोमहातपोघोर-तपोऽनुतपोमहोग्रतपश्च वः प्रीयन्ताम् २।। ॐ मतिश्रुताय-. धिमनःपर्यय नेवलज्ञानिनश्च वः प्रीयन्ताम ॥ यसवरुणकृबेर-वासवाश्च वः प्रीयन्ताम् ।। ॐ अनन्तवासुकीतक्षककर्कीटकपद्म-शखपालकुलिशजयविजयादिमहोरगाश्च वः प्रीयन्ताम् ॥ ॐ इंद्रा-ग्नियमनैर्ऋतवरुणवायुकुबेरईशानधरणेंद्रसोमारचेति दशदिद्याल काश्च वः प्रीयन्ताम् २ ॥ ओं सुरासुरोरगेन्द्रचमरचारणसिद्धः-विद्याधरिक सरकिम्पुरुषगरु डगन्ध वंयक्ष राक्ष सभूतिपशाचादच व ओं बुध शुक्रबृहस्पत्यर्केन्दुशनैरचराङ्गा -रकराहुकेतुतारकादिमहाज्योतिष्कदेवाश्च यः प्रीयन्ताम् २ ॥ ओं चमरवंरीचनधरणानन्दभूतानन्द वेणुदेव वेणुधारि पूर्णवसिष्ठ जलकान्तजलप्रभुघोषमहाघोषहरिषेणहरिकान्त अमितगतिअमि तबाहनवेलाञ्जनप्रभञ्जन अग्निशिखअग्निवाहनाःचेति विश्वति-भवनेन्द्राक्ष्य वः प्रीयन्ताम् २ ।। ओं गीतरित गीतकान्तसत्पुरुष-सुरूपप्रतिघोषपूर्णभद्रमाणिभद्रपुरुष चूलभीममहाभीमकालमहा-

कालाश्चेति षोडशब्यन्तरेन्द्राश्च वः प्रीयन्ताम् २।। ओं नामि राजजितशत्रु रृढराज व्यवरमेघराजधरणराजसुप्रतिष्ठमहासेन--सुप्रीषदृहरथविष्णुराजतसुप्रच्यक्तत्वमं सिहसेनमानुराजविश्वसेन -सुदर्शनकुम्भराजसुनित्रविजयमहाराजसमुद्रविजयविश्वसेन सिद्धाः र्थाश्चेति जिनजनकाश्च च. श्रीयन्ताम् २ ॥ॐमरुदेवीविजयासुषेणाः सिद्धार्थापुनङ्गलासुनीमापृथ्वीलक्ष्मणाजयराम।सुनन्दाविपुलान -न्दाजयावतो आर्यश्यामालक्ष्मीमतिनु त्रभाऐर। देवी श्रीकांतामित्रसे -नात्रभावती सोमार्वीपलाशिवदेवं ब्राम्ही त्रियकारिण्यश्चेति जिन-थातृ हारच वः प्रीयन्ताम् २ ।। ॐ गोमुखमहायक्षत्रिमुखयक्षेरवर-तुम्बर्कु पुमवरनन्दिविजयअजितब्रम्ह ईश्वरकुमारषण्युख पाताः लिक्सरिकम्युरुवगरुडगन्धर्वमहेन्द्रकुब रवरुणविद्यु - मसर्वाण्ह --धरणेंद्रमातङ्गनामाञ्चेति चतुर्विशतियक्षाश्च व. प्रीयन्ताम् २।-चकेश्वरीरोहिणोप्रज्ञप्तिवज्यगृंखलापुरुषदत्तामनोबेगाका -लीज्वाज्ञामालिनीमहाकालीमानवीगौरीगान्वारीवैरोटोअनन्त --मतिमानसी महामानसोजयाविजयाअपराजिताबहुरूपिणीचामुं-द्वीक्ष्टमाण्डीपद्मावतीतिद्वायिन्यश्चेति चतुर्विशतिजिनशा-सनदेवताइच वः प्रीयन्ताम् २ ॥ ॐ कुलगिरिशिखरशेखरीभूत-महान्हदादि मरोवर मध्यस्थित सहस्र दलक मलवासिन्यो मानिन्यः सकलसुन्दरीवृन्दवन्दितपादकमलाइवं देव्यो वः 'प्रीयन्ताम् २ ॥ 🕉 यक्षवैश्वानरराक्षसनधृतपन्नगअसुर सुकुमारपितृविश्वमालिनी

चमरवेरो अनमहाविद्यामारविश्ववेश्वरपिण्डाश्चनाश्चेति पंचदशति-थिदेवतारच वः प्रीयन्ताम् २ ॥ ॐ हिव्ठिमहिव्ठिम हिव्ठिम-मज्ज्ञम हिठ्ठभोपरिम मज्ज्ञमहिठ्ठिम मज्ज्ञममज्ज्ञम मज्ज्ञमो-परिम उपरिमहिठ्ठिम उपरिममज्झम उपरिमोपरिमाश्चेति नव-प्रैवेयकवासिनोऽहिमिन्द्रदेवाश्च वः प्रीयन्ताम् २ ॥ ४४ अर्च्च अर्च्चमालिनीवेरोचनसोमसोमरूपाङ् **हास्फः**टिकःदिस्यादि नवानु-दिशवासिनश्च वः प्रीयन्ताम् २ ॥ ॐ विजयवैजयन्तजयन्त—ं अपराजितसर्वार्थसिद्धिनामधेय पंचानुत्तरित्रमानवासिनइच वः प्रीयन्ताम् २ ॥ ॐ अतीतानागतवर्तमानविकल्पानेकविविध -गुणसम्पूर्णाध्टगुणसंपुक्ताः सकलसिद्धसमूहाश्च वः त्रीयन्ताम् २ ॥ 🕉 सर्वकालमि (* देवइत नामधेयस्य) सम्पत्तिरस्तु । सिद्धिरस्तु । वृद्धिरन्तु । तुष्टिरस्तु । पुष्टिरस्तु । शान्तिरस्तु । कान्तिरस्तु । कल्याणमस्तु । सम्पदस्तु । मनःसमाधिरस्तु । भेयोऽभिवृद्धिरस्तु । ज्ञाम्यन्तु धोराणि । ज्ञाम्यन्तु पापानि । पुण्यं वर्धताम्। धर्भो वर्धताम्। आयुर्वर्धताम्। कुलं गोत्रं चाभिवर्वताम् । स्वस्ति भद्रं चास्तु वः । ततो भूयोभूयः श्रेयसे ।। ॐ हीं स्वी क्ष्वीं हं सः स्वरत्यस्तु व.म्बस्त्यस्तु मे स्वाहां ११ॐपुण्याहं २ प्रीयन्ताम् २ ॥ भगवन्तोऽर्हन्तः सर्वज्ञः सर्वर्शशनः सकलकीयि

[#] यहां जिसके लिए शांति करे उसका नाम् लेवे।

सकलपुखास्त्रिलोकेशास्त्रिलोकेश्वरपूजितास्त्रिलोकना**या**स्त्रिलोक महितास्त्रिलोकप्रद्योतनकराजातिजरामरणविप्रमुक्ताः विदश्च ॐ श्री न्हीधृतिकीतिबुद्धि लक्ष्म्यश्च वः प्रीयन्ताम् २ ॥ ॐ वृषभादिवर्धमानान्ताः शान्तिकराः सकलकर्मरिपु-कान्तारदुर्गविषमेषु रक्षन्तु मे जिनेंद्राः । श्यसोमाग्ङारक बुधबृहस्पतिशुक्रशनैश्चर राहुकेतुनामनवग्रहाश्च **षः** प्रीयन्ताम् २।। ॐ तिथिकरणनक्षत्रवारम्हर्तलग्नदेवाश्च इहा-न्यत्र ग्रामनगराधिदेवताइच ते सर्वे गृरुभवता अक्षीणकोशकोष्ठा-गारा भवेयुदानतपोवीर्यधर्मानुष्ठःनादि नित्यमेवास्तु । मातृ-वितृभातृपुत्रपौत्रकलत्र गुरुसुहत्स्वजनसम्बधिवनधुवर्गसहितस्या-स्य यजामानस्य (+ देवदत्तनामधेयस्य) धनधान्यै दवर्यस्य तिबल-यश.कीतिबुद्धिवर्धनं भवतु सामोदप्रमोदो भवतु । शांतिर्भवतु कान्तिर्भवतु । तुष्टिर्भवतु । पुष्टिर्भवतु । सिद्धर्भवतु । अविघ्नमस्तु आरोग्यमस्तु। आयुष्यमस्तु। शुभं कमस्ति । कर्मसिद्धिरस्तु। शास्त्रसमृद्धिरस्तु । इष्टसपदस्तु । अरिष्टनिरसनमस्तु । धन-धान्यसमृद्धिरस्तु । काममाग्ङल्योत्सवाः सन्तु । शाम्यन्तु घोराणि शाग्यन्तु पापानि पुण्यं वर्धताम् । धर्मी वर्धताम् । श्रीवर्धताम् । क्षायुर्वेर्धताम् । कुलं गोत्रं चाभिदर्धताम् स्वस्ति भद्रं चास्तु धः स्वस्ति भद्रं चास्तु नः। इवीं ६वीं हं सः स्वस्त्यस्तु ते स्वस्त्यस्तु मे स्वाहा ॥

⁺ यहां जिसके लिए ज्ञान्ति करे उसका नाम लेवे।

अ नमोऽईते भगवते श्रीमते श्रीमत्याद्वतीर्थङ्कराय श्रीमद्रत्नत्रयालङ्कृद्धाय विव्यतेजोमूर्तये नमः प्रभामण्डलमण्डिताय द्वादशगणपरिवेष्ठिताय शुक्लध्यानपवित्राय सर्वज्ञाय स्वयम्भ्वे सिद्धाय बुद्धाय परमात्मने परमसुखाय त्रिलोकमहिताय । अन– न्तसंसारचऋपरिमर्दनाय । अनन्तज्ञानाय । अनन्तदर्शनाय । अन-न्तवीर्याय । अनन्तसुखाय । सिद्धाय बुद्धाय । त्रेलोक्यवशकराय सत्यज्ञानाय । सत्यब्रम्हणे । धरणेन्द्रफणामण्डलमण्डिताय । उप सर्गविनाशनाय। घातिकर्मक्षयंकराय। अजराय। अमराय। अभवाय । (- देवदत्तनामधेयस्य) मृत्युं छिद २ भिद २ ॥ हन्तुकामं छिंद २ मिंद २ ॥ रतिकाम छिंद २ भिंद २ ॥ विलिकामं छिद २ भिंद २॥ क्रोधं छिंद २ भिंद २॥ पाप छिंद २ मिंद २ ॥ वैरं छिंद २ भिंद २ ॥ वायुधरण छिद २ भिंद २।। अग्निभयं छिंद २ भिंद २।। सर्व शत्रु-भयं छिंद २ मिंद २।। सर्वोपसर्ग छिंद २ भिंद २।। सव विष्नं छिद २ भिद २ ॥ सर्व भयं २ ॥ सर्व राजभय छिद २ भिद २।। सर्व चोरभयं छिंद २ भिद २ ।। सर्व दुष्टभय सर्व सर्पभयं छिद २ भिद २।। सर्व वृश्चिकभयं छिद २ भिद २। सर्व ग्रहभयं छिद २ भिद २।। सर्व दोषं छिद २ भिद

⁻ यहां जिसके लिए शांति करे उसका नाम लेवे।

२।। सर्व व्याधि छिंद २ भिंद २।। सर्व क्षामडामरं छिंद २ मिंद २ ।। सर्व परमत्र छिंद २ मिंद २ ।। सर्वात्मघातं छिंद २ भिंद २ ॥ सर्वपरघात छिद २ भिंद २ ॥ सर्व कुक्षिरोगं छिद २ भिद २॥ सर्व जूलरोगं छिद २ भिद २॥ सर्वाक्षिरोगं छिद २ भिंद २।। सर्विशारोरोग छिंद २ मिंद २।। सर्वे कुष्टरोग छिंद २ भिंद २।। सर्वे ज्वररोगं छिंद २ भिंद २।। सर्वे नरमारि छिद २ भिद २ ॥ सर्व गजमारि छिद २ भिद २ ॥ सर्वादवमारि छिद २ भिद २ ॥ सर्वगोमारि छिद २ भिद २ ॥ सर्व महिषमारि छिद २ भिद २ ॥ सर्वाजमारि छिद २ भिद २ ॥ सर्वतस्यमारि छिद २ भिद २ ॥ सर्व धान्यमारि छिद २ भिद २ ॥ सर्वे वृक्षमारि छिन्द २ भिन्द २ ॥ सर्वे गुल्ममारि छिन्द २ भिद २ ॥ सर्वलतामारि छिन्द २ भिन्द ॥ सर्वपत्र-मारि छिन्द २ मिद २ ॥ सर्वपुष्पमारिं छिन्द २ भिन्द २ ॥ सर्व फलमारि छिन्द २ मिन्द २ ॥ सर्व राष्ट्रमारि छिन्द २ भिन्द २ ॥ सर्वदेशमारि छिन्द २ भिन्द २ ॥ सर्व विषमारि छिन्द २ भिन्द २।। सर्व क्रूररोगवेतालज्ञाकिनीडाकिनीभयं छिन्द २ मिन्द २ ॥ सर्ववेदनीयं छिद २ भिन्द २ ॥ सर्व मोहनीयं छिन्द २ मिन्द २ ॥ सर्वापस्मारं छिन्द २ भिन्द ५ ॥ सर्वेदुर्भग छिन्द २ मिन्द २॥

ॐ सुदर्शनमहाराजचऋविक्रमतेजोबलशौर्यवीयंवश २॥ सर्व जनानन्द कुरु २॥ सर्व जीवानन्दं कुरु २॥ सर्व भव्यानन्दं कुरु २ ॥ सर्व गोकुलानन्द कुरुं २ ॥ सर्वग्रामनगर-खेडखर्वडमडम्बपत्तनद्रोणमुखजनानन्द कुरु २।। सर्वलोकसर्वदेश-सर्वसत्त्रवश कुरु २॥ सर्वानन्द कुरु २॥ हन २ दह २ पच २ पाचय २ कुट २ जी छं २ सर्वं वज्ञमानय हू फट् स्वाहा ॥ यत्मुख त्रिषु लोकेषु । व्याधिव्यंसनवीजतम् ।। अनु:-अभयं क्षेममारोग्यः स्वस्तिरस्तु विधीयते ॥ १॥ कल्याणमस्तु कमलाभिमुखी सदास्तु ॥ वसतः दीर्घायुरस्तु कुलगोत्रसमृद्धिरस्तु ॥ आरोग्यमस्त्वभिमतार्थफलाप्ति**रस्**तु ॥ भद्रं तवास्तु जिनपुड्गव भिक्तरस्तु ॥ २ ॥

शार्व्लः श्रीमज्जैनजना चिचतप्रकटित स्याद्वादरत्नाकरः।
सद्धर्मामृतचन्द्रसुश्रुतकरो लावण्यरत्नाकरः।
मोक्षद्वारकवाटपाटनपदुः प्रध्यानरत्नाकरः।
भौमो भूरि गुणाकरो विजयते योगीन्द्ररत्नाकरः॥
मुक्तिश्रीविनताकरोदकिमदं पुण्यांकुरोत्पादकम्।
नागेनद्रत्रिदशेनद्रचऋपदवीराज्याभिषेकोदकम्॥
स्यात् १ ज्ञानचिर्त्रदर्शनलतासं वृद्धिसम्पादकम्।
कोर्तिश्रीजयसात्रकं तव जिन स्नानस्य गन्धोदकम्॥

नेत्रद्वन्द्वरुजा विनाशनकर गात्र पवित्रीकरम् । वातोत्पत्तिकफादिदोषरिहतं गात्र च सूत्रं भवेत् ॥ कामालाक्षयकुष्टरोगविषमग्राहक्षयंकारि तत् । श्रीमत्पार्श्वजिनेन्द्रपादयुगलस्नानस्य गन्धोदकम्

।। इति महाशांतिमंत्र ।।

घातिवातविघातजातविषुल श्रीकेवलज्योतिषो । देवस्यास्य पवित्रगात्रकलनात् पूतं हित मगलम् ॥ कुर्याद्भव्यभवातिदावशमदं स्वमेक्षिलक्ष्मीफलम् । प्रोचद्धर्मलताभिवर्धनमिदं सद्गन्धगन्धोदकम् ॥ नि.शेषाभ्युदयोपभोगफलवत्पुण्यांकुरोत्पादकम् । ध्त्वा पंकनिवारकं भगवतः स्नानोदकं मस्तके ॥ ध्यातौ विश्वमुनीश्वरैरिमनुतौ प्रेक्षावतामि चतौ। इन्द्राद्यैर्मुहर्राच्चतौ जिनपतेः पादौ समभ्यच्चये ॥७॥ स्नानान्तरमर्हतः स्वयमपि स्नानाम्बुशेषा धृतो । वार्गन्धाक्षतपुष्पदामचरुकैर्दीपैश्च धूपैः फलैः॥ कामोद्दामगजाङ्कुञं जिनपति स्वभ्यच्च्यं संस्तोति यः। स स्यादारविचन्द्रमक्षयमुखं प्रख्यातकीर्तिध्वजः ॥

महाशांतिपुष्पमंत्र: — ॐ नमोऽहिते भगवते श्रीमते प्रक्षीणा गेवदोषकल्मषाय दिव्यतेजोमूर्तये नम. श्रीशांतिनाथाय शांति—कराय सर्व पापप्रणाशनाय सर्वदिष्टनिवनाशनाय सर्वरोगोपसर्ग विनाशनाय सर्वपरकृतक्षुद्रोपद्रविवनाशनाय सर्व क्षामडामर विनाशनाय ॐ न्हां न्हीं न्हू न्हीं न्हः असिआउसा (* देवदत्त नामधेयस्य) सर्व शांति कुरु २ वषट् स्वाहा ।।

॥ ॐ शांति ३। मगल भूयात् ॥

श्री अरिहंत पूजा (मराठी)

चिद्र्षं विश्वरूपव्यतिकरितमनाद्यन्तमानंदसांद्रम् । यत्त्राक् तैस्तैर्विवर्तेव्यंवृतदितपतद्दुःखसौख्याभिमानः । कर्मोद्रेकात्तदात्मप्रतिद्यमलभिदोद्भिन्ननिस्सोमतेजः । प्रत्यासीदत्परीजःस्फुरदिह परमब्रम्ह यज्ञेऽहमाव्हं ॥ १॥-

ॐ न्हीं विधियज्ञ प्रतिज्ञापनाय श्रीजिनप्रतिमांग्रे पुष्पांजील क्षिपेत् ।

स्वामिन् संवीषट् कृताव्हाननस्य-तिष्ठत्तेनोट्टवितस्थापनस्य । स्वं निर्नेक्तुं तं वषट्कार जाग्रत्सांनिध्यस्य प्रारभेयाष्टधेष्टि।

ॐ न्हीं अहँ श्री परमब्रम्ह अत्रावतरावतर संवीषट् अव्हाननं । अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः (स्वापनं) अत्र मम सिन्निहितो भव भव वषट् (सिन्निधापनं)

^{*} यहां जिसके लिए शांति करे उसका नाम लेवे।

अप्टक गडगिंसध्वादि संमय नीर । स्वर्णभृगार खनिनचि हीर ॥ जन्मजरामृति कर दूर, जिनेंद्रवाद पूजामि भावे करा। पूजों २ श्री अरिहत देवा । ज्याची शनइंद्र फरितात सेवा । आहे पुण्या धर्माचा ठेवा, जिनेद्र पाद पूजामि भावे करा २ पूजी । जलम् ॥ पोत काशमीर केशर आणि शित कर्ष्ट्र श्रीवड सानि ।। करि भवश्रमाची हानि, जिनेद्रपाद पुत्रामि भाषे करा पूजी० चन्दनम्०। गालि कामोदा वासि सुगन्धो, ज्याची मुनताफन कृतसंधी

केली अक्षय पदािय बन्दी, जिनेद्रराद पूजािम भावे कर पूत्री० अज्ञतान् ॥

नाग चपा चपक चमेली, मन्द मंदार पुष्प बहु मेली॥ काम विध्वन्स सहिली, जिनेंद्र पाद पूजामि भावे करू पूजी० पुष्य ।

घृत घेबर साखर पूरी गव्य मिष्टान्न मिश्रित खीरी।। ज्याने केले क्षुधादिक दूरी, जिनेद्र पाय पूजानि भावे कह पूजी । नैवेद्यं ।

घृत अरूनी दीप प्रजाली, आणि कापूर ज्योति उजाली ॥ महा मोहान्ध तमते टाली, जिनेद्र पाद पूजामि भावे करू पूजी० दीप०।

खेऊ जिना घ्री घूप पिगाणी, दश सुगंध वासित आणि।

अष्टकर्माची होईल हानी, जिनेंद्रपाद पूजािम भावे करू पूजी धूप।
पूग नारिंग धीफल केले, पिस्ता बादाम अखरोट फरे।
तुम्हा होईल फल अढाल, जिनेंद्रपाद पूजािम भावे करू पूजी फल अष्ट द्रव्यादि एकत्र जोडी, कर्मबन्धाचे बन्धन तोडी हेमकी तिचे भवस्रम फोडी, जिनेंद्र पाय पूजािम भावे करू पूजी अर्ध्य नि

॥ अथ जयमाला प्रारम्यते ॥

बन्दे तानमरप्रवेकमुकुटगोत्तारणप्रस्फुर-। द्धामस्तोमविमिधिताः पदनखा भास्वत्करा रेजिरे ॥ येषां तीर्थकरेशिनां सुरसिरद्वारिप्रवाहेल्लुठ - । द्दिन्यहेवनितम्बनीस्तनगलत्काश्मीरपूरा इव ।। १ ।। वृषम त्रिभुवनपतिशनवन्द्यम्, मन्दरगिरिमिव धीरमनिन्द्यम् बन्दे मनसिजगजमृगराज, राजिततनुमजित जिनराज ॥ २ ॥ सम्भवदुज्ज्जलगुणमहिमान, समवजिनपतिमप्रतिमानं । अभिनन्दनमांनदितलोकं, विद्यालोकितलोकालोक ॥ ३ ॥ सुमति प्रशमितकुनयसम्हं, निर्दे लिताखिलकर्मसम्हम्। बन्दे त पद्मत्रभदेवम्, देवासुरनरकृतपदसेवम् ॥ ४ ॥ सेवकम् निजनसुरतरुपादवीम् प्रणमामि प्रथितं च सुपादवी। त्रिभुवनजननयनोत्पलचन्द्रं, चन्द्रप्रभमपर्वाजततन्द्रम् ॥ ५ ॥ सुविधि विध्यवलोज्ज्वलकोति, त्रिभुवनजनपतिकीतितपृति । भूतलपतिनुतशीतलनाथं, ध्यानमहानलहुतरतिनाथं ॥ ६॥

स्पष्टानन्तचतुष्टयनिलयं, श्रेयोजिनपतिमपगतविलयं। श्री वसुपूज्यसुतं नुतपाद, भव्यजनप्रियदिव्यनिनादं ॥ ७ ॥ कोमलकमलदलायतनेत्रं, विमलं केवलसस्यक्षेत्रं। निजितकन्तुमनतिजनेश, धन्दे मुक्तिवधूपरमेशं ।। ८ ।। धमं निर्मलश्चमित्रम् । धर्मपरायणजनताश्चरणम् । शांति शांतिकरं जनतायाः भक्तिभरक्रमकमलनतायाः ॥ ९ ॥ कुन्थुं गुणमणिरत्न करण्ड । ससाराम्बुधि तरणतरण्ड ॥ अपरीनेत्रचकोरीचन्द्र । अरपरमं पदविनुतमहेंद्रं ॥ १०॥ उद्धतमोहमहाभटमल्ल । मल्लि फुल्लशरप्रतिमल्ल ॥ सुव्रतमपगतदोषनिकायं। चरणांबुजनुतदेवनिकायं । ११।। नीमि नमिगुणरत्नसमुद्रं। योगिनिकपितयोगसमुद्रं।। नीलक्यामलकोमलगात्र । नेमिस्वामिनमेनोदात्रं ।। १२ ॥ फणिफणमण्डपमन्डितदेहं । पार्वं निजहितगतसदेह ॥ वीरमपारचरित्रपवित्रं । कर्ममहीरुहमूललवित्र ॥ १३॥ ससाराप्रतिमप्रतिबोधं। परिनिष्क्रमणं केवल बोधं॥ परिनिर्वृतिसुखबोधितबोधं । सारासारिवचारिववोधं ॥ १४॥ वन्दे मन्दरमस्तकपीठे । कृतजनमाभिषवं नृतपीठे ।। दर्शन तव लब्धिविकरणं। केवलबोबामृतमवतरणं॥ १५॥ अनणुगुणनिबद्धामहेतां माघनन्दिवतिरचितसुवणनिकपुष्पव्रजानां सभवति जयमालां यो विधन्ते स्वकंठे

प्रियपितरमरश्रीमोक्षालक्ष्मीवधूनाम् ॥१६॥ इसकेवाद जो पूजन करना हो करे। सभी पूजन होनेके वाद णमोकार मंत्रकी अथवा नीचे लिखे मंत्रकी १ माला फेरे। अ न्हां न्हीं न्हें न्हीं न्हः असि आ उसा नमः

देववंदनाविधिः ईर्यापथविशुद्धिः

पिडक्कमामि भंते, इरियाविह्याये, विराहणाए अणागुत्ते आइगमणे, णिग्गमणे, ठाणे, गमणे, चकमणे, पाणुग्गमपणे बीजुग्गमणे हरिदुग्गमणे, उच्चार-परसवण-खेलिंसघाण-वियिद्धपह्टाव-णियाए, जे जीवा एइदिया वा, वेइदिया वा, तेइदिया वा चडिरिंदि या वा, पिंचिदिया वा, णोल्लिदा वा, पेल्लिदा वा, संघिद्धदा वा, सघादिदा वा, परिदाविदावा, किरिंचिछदा वा, लेस्सिदा वा छिदिदा वा, भिदिदा वा, ठाणदो वा, ठाणचकमणदो वा, तस्स उत्तर गुणं, तस्स पायिचछत्त करणं, तस्स विसोही करण जाव अरहताण भयवंताणं णमोकार पञ्जुवास करेगि, तावकाय पावकमम दुच्चरियं वोस्सरामि! (९ जाप्य)

आलोचना

ईयापथे प्रचलिताद्य मया प्रमादा-देकेन्दियप्रमुखजीवनिकायबाद्या । निर्वितता यदि भवेदयुगान्तारेक्षा मिथ्या तदस्तु दुरित गुरुभक्तितो मे ॥ १ ॥

इच्छामि भंते ! आलोचेउ इरियावहियस्स पुव्वृत्तर दिव्हण पच्छिम चउदिस विदिसासु विरहमाणेण जुगंत्तर दिव्हिणा भव्वेण दिवृत्वा ! पमाददोसेण डबडव चरियाए पाणभूद जीवस त्ताण उववादो कदो वा कारिदो वा कीरतो वा समणुमणिदो तस्स मिच्छा मे दुक्कड ।

नमोऽस्तु भगवन् देववदना किन्दियामि । सिद्धं संपूर्णभव्यार्थं सिद्धे कारणमुत्तम । प्रशस्तदर्शनज्ञान चारित्रप्रतिपःदकम् ॥ १।। सुरेन्द्रमुकुटाविलष्टपादपद्मांशुकेशरम् । प्रणमामि महावीर लोकत्रितयमंगलम् । २ ॥ खम्मामि सन्वजीवाण सन्वे जीवा खमतु मे । मित्ती मे सन्वभूदेसु वैर मज्झण केण वि ॥ ३॥ राय बंग्न पदोसं च हरिस दीण भावप । उस्मुगत्त भय सोग रदिमरदि च वोस्सरे । ४ ॥ हा दुहुक्यं हा दुहु चितिय भासिय च हा दुठ्ठं । अतो अतो डज्झमि पच्छत्तावेण वेदतो ॥ ५॥ दम्बे खेत्ते काले भावे य कदा वराहसोहणय । णिदण गरहण जुली मणवचकायेण पडिकमण ॥ ६॥ समता सर्वभूतेषु सयमः शुभभावना । आर्तरौद्रपरित्यागस्तद्धि सामायिकं मतम् ॥ ७ ॥ भगवन्नमोऽस्तु प्रसीदन्तु प्रभुपादौ वदिष्येऽह एषोऽहं सर्व सावद्य योगाद्विरतोऽिम ।

अथ पौर्चान्हिक देववदनायां पूर्वाचार्यानुक्रमेण सकलकर्मझ गार्थ भावपूजावंदनास्तवसमेत चैत्यभिक्त कायोत्सर्गं करोम्यह।

सामायिकदंडक

णसो अरहताण णमोसिद्धाण णमो आयिरियाण। णमो उवज्ञायाण णमो लोए सब्बसाहणं॥

चतारि मगल, अरहत मगल, सिद्धमगलं, साहू मगल केविल पण्णत्तो धम्मो मगल। चतारि लोगुत्तमा, अरह र लोगु-त्तमा, सिद्धालोगुत्तमा, साहू लोगुत्तमा, केविलपण्णत्तो धम्मो लोग्तमा,चलरिसरण पन्वज्जामि,अरहत सरण,पव्यज्जामि सिद्ध सरणं पव्यज्जामि, केविलपण्णत्तो धम्मो सरण पव्यज्जामि ।

अहडज्जदीवदोसमुद्देसु पण्णारसकम्मभूमिसु जावअर-हंताण भयवताणं आदियराण तित्थयराणे जिणाण जिणोत्तमाणं केवलियाण,सिद्धाणं बुद्धाण परिणिणिव्बुदाण अतयडाण पारय-डाण धम्माइरियाण धम्मदेसियाण,धम्मणायगाण,धम्मवरचाउ-रग चक्कविठ्ठण, देवादिदेवाण, णाणाण, दसणाण, चरित्ताण सदा करेमि किरियम्म ।

करेमि भत्ते! सामाइयं सन्त सावज्जजोगं पञ्चक्लामि जावज्जीव तिबिहेण मणसा वचसा कायेण ण करेमि ण कारेमि कीरत पि ण समणूमणामि । तस्स भंते । अइचारं पञ्चक्ला-मि णिदामि, गरहामि, अप्पाण, जाव अरहंताण भयवताण पज्जुवासं करेमि ताव काल पावकम्म दुच्चरियं वोस्सरामि।

चतुर्विशतिस्तवः

थोस्सामि ह जिणवरे तित्थयरे केविल अणंत जिणे। णर पवर लोयमहिए. विहुयर यमले महप्पण्णे ॥ १॥ लोयस्सुन्जोययरे धम्मं तित्थकरे जिणे वंदे । अरहते कित्तिस्से चउवीसं चेव केवलिणो ॥ २॥ उसहमजियं च वंदे सभवमिमणंदणं च सुमीय च पउमप्पहं सुपास जिणं च चंदप्पह वदे ॥ ३ ॥ सुविह्नं च पुष्फयत सीयलसेय च वासुपूज्य च । विमलमणंतं भयव धम्म सत्ति च वंदामि ॥ ४॥ कुथू च जिणवरिद अरं च मिल्ल च सुव्वयं च णींम वंदामि रिट्टणेमि तह पास वढ्ढमाणं च ॥ ५ ॥ एवं मए अभित्युआ विहुयर यमलापहीणजरमरणा। चउवीस पि जिणवरा तित्थयरा मे पसीयंतु ॥ ६ ॥ कित्तिय वदिय महिया एदे लोगोत्तमा जिणा सिद्धा ।। आरोग्गणाणलाहं दितु समाहि च मे वोहि ॥ ७ ॥ चदेहि णिम्मलयरा आइच्चेहि अहियपयासंता । सायरमिव गंभीरा सिद्धा सिद्धि मम दिसतु ।। ८ ॥

चैत्यभक्तिः

जयित भगवान् हेमाम्भोजप्रचारिवजृंभिता-वमरमुकुटच्छायोद्गीर्णप्रभापिरचुंबितौ ॥ कलुषहृदयामानोद्भ्रान्ताः परस्परवैरिणः। विगतकलुषाः पादौ यस्य प्रपद्य विशक्वसुः॥ १॥

देववंदनाविधि

तदनु जयति श्रेयान् धर्म प्रवृद्धमहोदयः। कुमतिविपथक्लेशाद्योऽसौ विपाशयति प्रजाः ॥ परिणतनयास्यांगी भावाद्विविक्तविकल्पितं। भवतु भवतस्त्रात् त्रेधा जिनेंन्द्रवचोमृतं ॥ २ ॥ तदनुजयताङजैनीवित्तिः प्रभंगतरंगिणी । प्रभव विगमधौग्यद्रदयस्वसावविभाविती ।। निरुपमसुखस्येंदं द्वारं विघट्च निरर्गलं। विगतरजसं मोक्षं देयान्निरत्ययमन्ययम् ॥ ३ ॥ अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायेभ्यस्तथः च साधुभ्यः। सर्व जगद्वंद्येभ्यो नमोऽस्तु सर्वत्र सर्वेभ्यः ॥ ४॥ मोहादि सर्व दोषारिघातकेश्यः सदाहतरजोश्यः। विरहितरहस्कृतेभ्यो पूजाहेंभ्यो नमोऽहंद्भ्यः ॥ ५॥ क्षान्याजेवादिगुणगण सुसाधनं सकललोकहितहेतु। शुभ धामनि धातारं वंदे धर्मं जिनेन्द्रोक्तम् ॥ ६ ॥ मिथ्याज्ञानतमोवृत लोकंकज्योतिरमितगमयोगि। सांगोपांगमजेयं जेनं वचन सदा वंदे ॥ ७ ॥ भवनविमानज्योतिन्यंतरनरहोकविश्वचैत्यानि । त्रिजगदिभवंदितानां वंदे त्रेद्या जिनेन्द्रागां ॥ ८ ॥ मुवनत्रयेऽपि भुवनत्रयाधिपाभ्यच्यं तीर्थकर्तृणां । वंदे भवाग्निशास्यै विभवानामालयालीस्ता. ॥ ९ ॥ इति पचमहापुरुषाः प्रणुता जिनधर्मवचनचैत्यानि चैत्यालयारच विमला दिशंतु बोधि बुधजनेष्टां ॥ १० 📭 अकृतानि कृतानि चाप्रमेय, चृतिमंति चृतिमत्पृ मंदिरेषु ।

मनुजामरपूजितानि वन्दे प्रतिविद्यानि जगत्त्रये जिनानां ।११।

चृतिमन्डलभासुरांगयष्टीः प्रतिमा अप्रतिमा जिनोत्तमानां ।

भुवनेषु विभूतये प्रवृत्ता वपुषा प्राञ्जलिरिक्षम वन्दमानः ।१२।

विगतायुधिविकिया विभूषाः प्रकृतिस्थ। कृतिनां जिनेश्वराणां ।

प्रतिमाः प्रतिमागृहेषु कान्त्या प्रतिमा कल्मषर्गातयेभिवन्दे ।।

कथयन्ति कषायमुक्तिलक्ष्मीं परया ज्ञांतत्त्या भवान्तकानां ।

प्रणमाम्यभिष्ठपमूतिमति प्रतिष्ठपाणि विशुद्धये जिनानां ।१४।

यदिद मम सिद्धभिवतनीत सुकृतं दुष्कृतवर्तमरोधि तेन ।

नदुना जिनधमं एव भिवतमंवताज्जन्मिन जन्मिन स्थिरा मे ।।

अर्हतां सर्वभावानां दर्शनज्ञानसपदां।
कीर्तायिष्यामि चैत्यानि यथाबुद्धि निशुद्धये।। १६।।
श्रीमद्भावनवासस्थाः स्वयं भासुरमूर्तयः।
वन्दिता नो विधेयासु प्रतिमाः परमां गीतः।। १७॥
यावन्ति सित लोकेऽस्मिन् अकृतानि कृतानि च।
तानि सर्वाणि चैत्यानि वन्दे भूयांसि भूतये॥ १८॥
ये व्यन्तरिवमानेषु स्थेयांसः प्रतिमा गृहाः।
ते च संख्यामितकांता सन्तु नो दोषिविच्छिदे॥ १९॥
चयोतिषामथलोकस्य भूतयेऽद्भृतसम्पदः।
गृहाः स्वयंभुवः सित विमानेषु नमामि तान्॥ २०॥
वन्दे सुरितरीटाग्रमणिच्छायाभिषेचनम्।
या. क्रमेणेव सेवन्ते तदर्चाः सिद्धिलव्धये॥ २१॥
इति स्तुतिपथातीत श्रीभृतामर्हतां ममः।
चैत्यानामस्तु संकीर्तिः सर्वास्रविनरोधिनी ॥ २२॥

अर्हन्महानदस्य त्रिभुवनभव्यजनतीर्थयात्रिकदुरित-। प्रक्षालनैककारणमितलौकिककुहकतीर्थमुत्तमतीर्थम् ॥ २३ ॥ लोकालोकसुतत्त्व प्रत्य वबोधनसमर्थदिव्यज्ञान-। प्रत्यहवहत्प्रवाह व्रतशोलामलविशालक्लद्वितयम् ॥ २४ ॥ ज्**बलध्यानस्तिमितस्थितराजद्राजहंसराजितससकृत्**। म्वाध्यायमन्द्रघोष नानागुणसमितिगुप्तिसिकतासुभगम् ॥ क्षास्यावर्तसहस्रं सर्व विकचकुसुमविलसल्लतिकम् । दु सहपरीषहाख्यद्रुततररगत्तरंगभंगुरनिकरम् ।। २६।। व्यपगतकषायफेन रागद्वेषादिदोषशेवलरहितम्। अत्यस्तमोहकर्दममतिदूरनिरस्तमरण-मकरप्रकरम् ॥२७॥ ऋषिवृषभस्तुतिमंद्रोदेकितनिर्घोषविविधविहगध्वानम् । विविधतपोनिधिपुलिनं सास्रवसवरणनिर्जरानि स्रवणं ।२८। गणधरचऋत्ररेंद्रप्रभृतिमहाभव्यपुण्डरीकै. पुरुषैः । वहुभिः स्नात भवःया कलिकलुषमलापकर्षणार्थमसेयम् ॥२९॥

अवतीर्णवतः स्नातुं ममापि दुस्तरसमस्तदुरित दूर
व्यवहरतु परमपावन मनन्यजस्य स्वभावगभीरम् ।३०।
अताम्रनयनोत्पल सकलकोपवन्हेर्जयात् ।
कटाक्षश्वरमोक्षहीनमिवकारतोद्रेकतः ॥
विषादमदहानितः प्रहसिताय मान सदा ।
मुखं कथयतीव ते हृदयशुद्धिमात्यतकीं ॥ ३० ॥
निराभरणभासुरं विगतरागवेगोदयात् ।
निरंबरमनोहरं प्रकृतिल्पनिर्दोषतः ॥

निरायुधसुनिर्भय विगतिहस्यहिसाक्तमात् ।
निरामिषसुतृष्तिमद् विविधवेदनानां क्षयात् ॥ ३२ ॥
मितस्थितनखांगजं गतरजोम हस्पर्शन ।
नवांबुष्ठहचन्दनप्रतिमदिच्यगन्धोदयम् ॥
रवोन्दुकुलिशादिदिच्यबहुलक्षणालंकृतं ।
दिवाकरसहस्रभासुरमपीक्षणानां प्रियम् ॥ ३३ ॥
हितार्थपरिपेथिभिः प्रबलरागमोहादिभिः ।
कलितमनाजनो यदिभवीक्ष्य शोशुध्यते ।
सदाभिमुखमेव यज्जगित पश्यतां सर्वतः ।
शरद्विमलचन्द्रमन्डलिमवोत्थित दृश्यते ॥ ३४ ॥
तदेतदमरेश्वरप्रचलमौलिमालामिण- ।
स्फुरिकरणचुंबनीयचरणारिवदद्वयम् ।
पुनातु भगविज्जनेन्द्र । तव रूपमधीकृत ।
जगत्सकलमन्यतीर्थगुष्क्षपदोषोद्ये ॥ ३५ ॥

इच्छामि भत्ते ! चेइयमितकाओसग्गो कओ तस्सालोचेऊं।
अहलोय तिरियलोय-उड्ढलोयम्मि किट्टिमा किट्टिमाणि
जाणि जिणचेइयाणि ताणि सन्वाणि तिसुवि लोएसु भवणवासिय
वाणवितर-जोइसिय-कप्पवासियित्तं चउविहा देवा सपिरवारा
दिन्वेण गन्धेण-दिन्वेण पुष्फेण दिन्वेण धूवेण दिन्वेण चुण्णेण
दिन्वेण वासेण दिवेण ण्हाणेण णिच्चकालं अंचंति पुज्जति
वन्दित णमंसन्ति अहमिव इह सन्तो तत्थं सन्ताइ णिच्चकाल
अंचेमि पूजेमि वन्दामि णमंसामि दुक्खक्खओ कम्मक्खआं वोहिलाहो सुगइगमणं समाहिमरणं जिणगुण सपत्ति होउ मन्द्रा।

अथ पौर्वाण्हिकदेववन्दनायां पूर्वाचार्यानुक्रमेण सकल-कर्मक्षयार्थं भावपूजावन्दनास्तवसमेतं पञ्चमहागुरुभिक्त कायोत्सर्गं करोम्यहं।

(णमो अरहंताण : चत्तारि मंगलं आदिकरके ९ जाप्य करे पुनः थोस्सामि स्तुति पढकर पंचगुरुभित करें।)

पंचगुरुभक्तिः

मणुयणाइदसुरधरिय छत्तत्तया, पंचकत्लाण सोक्खावलीपत्तया। दंशण णाणझाण अणंतं बलं, ते जिणा दितु अम्हं वरं मगलं ।१। जेहि झाणिगवाणेहि अइदड्ढय, जम्मजरमरण रयणत्तप दड्ढय। जेहिएलं सिवं सासयं ठाणयं, ते महं दितु सिद्धावर णाणय ।२। पच आयार पंचिगमंसाहया बारसगाइ सुअजलिह अंगाइया। मोक्खलच्छी महंती महते सया, सूरिणो दिनु मोक्खं गया सगया।। घोरमंसार भीमाडवी काणणे तिक्ख वियरालणहुपावपचाणणे । णटु मग्गाण जीवाण पहदेसया, विदमो ते उवज्झाय अम्हे सया।। उग्ग तव चरण करणेहि खीणगया,

धम्मवरझाणसुक्केक झाणं गया। णिब्भरं तवितिरिय समालिंगया,साहवो ते महामोक्खपथमग्गया।। एण थोत्तेण जो पंचगुरु वदये गुरुष संसारघनबल्लिए छिदये। लहइ सो सिद्धसोक्खाइ बहुमाणणं,कुणइ कम्मिश्रणं पुंजपज्जालण

> अरुहा सिद्धाइरिया उवझाया साहु पंचपरमेट्ठीः। एदे पंच णमोयारा भवे भवे मम सुहं दितु ॥ ७ ॥

इज्छामि भत्ते ! पंचमहागुरुमत्ति का उसग्गो कथो तस्सालोचेउ । अट्ठमहापाडिहेर सजुत्ताणं अरहंताण, अट्टगुण सपण्णाण उड्ढलोयमत्थयिम पइट्टियाण सिद्धाणं,अट्ठपवयण भउसजुत्ताण आइरियाण, अध्यारादिसुदणाणोवदेसयाण, उवज्झायाण
तिरयणगुणपालणरदाण सन्वसाहुण णिच्चकालं अचेिम
पूजेमि वन्दामि णमंसामि दुक्खक्खओ कम्मक्खओ बोहि
लाओ, सुगइगमण समाहिमरणं जिगगुणसंपत्ति होउ मन्झ ।

अय पौर्वाण्हिक देववन्दनायां पूर्वाचार्यातुक्रमेण सकल कर्म क्षयार्थ भावपूजावन्दनास्तवसमेतं श्री चैत्य-पचगुरुभक्तीः कृत्वा तद्धीनाधिकदोषविशुष्ट्यर्थं अन्तमपवित्रीकरणार्थं समाधि भिवत कायोत्सर्गं करोम्यह ।

समाधिभक्तिः

(णमो अरहंनाण . चत्तारि मंगल ... आदि करके ९ जाप्य करे नतर थोस्सामि स्तुति कर समाधिभक्ति पढे।)

> प्रथम करण चरणं द्रव्यं नमः। शास्त्राभ्यासो जिनपतिनुतिः सगितः सर्वदार्यः सद्वृत्तानां गुणगणकथा दोषवादे च मौनम् । सर्वस्यापि प्रियहितवचो भावनाचात्मतत्वे सम्पर्धता मम भवमवे यावदेतेऽपवर्गः॥ १॥ तव पादौ मम हृदये मम हृदयं तव पदद्वये लीनम्। तिष्ठतु जिनेन्द्र ! तावद्यावन्निर्वाणसंप्राप्ति ॥ २॥

अक्खरपयत्थहीणं मत्ताहीणं च जं मए भणियं। तं खमउ णाण देवय मज्झ य दुक्खक्खयं दितु ॥ ३ ॥

इच्छामि भंते । समाहिभत्तिकाउसग्गो कथो तस्सालोचेउ,रयणत्तय सरूव परमप्पज्झाणलक्षण समाहि सन्वकाल
अचेमि पुज्जेमि वन्दामि णमंस्सामि दुक्खक्खथो कम्मक्खर्थाः
बोहिलाओ सुगइगमणं समाहिमरणं जिणगुण संपत्ति होउ मन्झं।
(अनन्तर यथावकाश आत्मध्यान करें।)



स्वर्गीय श्री १०८ श्री आचाय शांतिसागर वीरसागर चन्द्रसागरजी महाराजकी सम्मिलित पूजन

(ले संघस्य ब्रम्हचारी सूरजमल जैन)

(संशोधकः-श्री प. मनोहरलालजी शाह सुजानगढ)

॥ स्थापना अडिल्ल ॥

हे गुरुवर श्री शांतिसिंधु मुनिराजजी। वीरसिन्धु गुणखान नमूं हितकारजी।। घोरतपस्वी चन्द्रसिन्धु वन्दन कर्छ। हृदय बिराजो गुरुवर आव्हानन कर्छ।।

ॐ न्हीं श्री १०८ श्री आचार्य शांतिसागर वीरसागर चन्द्रसागर मुनयः अत्र अवतरत २ संवीषट् आव्हानन अत्र तिष्ठत, तिष्ठत ठ. ठः स्थापनं। अत्र मम सिन्नहिता भवत भवत वषट् सिन्नवीकरणम्॥

लाऊँ जलगगा विमलतरगा है अति चंगा मिर भृंगा।
तुम चरण चढाऊं पाप नशाऊं करू शी घ्र ज्यों भवभंगा।
श्री शातिसिन्धुजी वीरसिधुजी चन्द्रसिन्धु मुनिवर ध्याऊ।
हो तत्त्व प्रकाशी स्वगंनियासी करो कृपा ज्यों शिव पाऊ॥

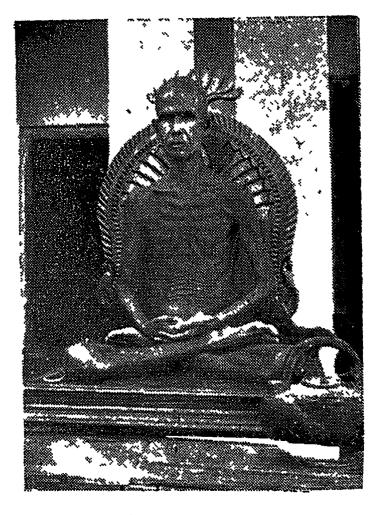
ॐ न्हीं आचार्य शांतिसागर वीरसागर चन्द्रसागरेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ॥





श्री. परमपूज्य तपोनिधि स्व. आचार्य वीरसागर महाराज





श्री परमपूज्य तयोनिधि आचार्य शिवसागर महाराज

गोशीर घिसाया अलिगुंजाया केसरमिश्रित रंग महा।
भवताप नशावन सुख उपजावन चन्दन तुम्हें चढाऊ आ।।
श्री शांतिसिन्धुनी वीर सिन्धुजी चंद्र सिन्धु मुनिवर ध्याऊ।
हो तत्त्व प्रकाशो स्वर्गनिवासी करो कृपा ज्यों शिव पाऊ।।
ॐ न्हीं. श्री आ … चन्दन नि. स्वाहा।।

भोती सम मनहर अक्षत सुन्दर ले आया तब चरण गही।
भे पूजूं ध्याऊं पाप नशाक हे गुरु पाऊं मोक्ष मही।।
श्री शांतिसिन्धूजी बोरिसन्धूजी चन्द्रसिन्धू मुनिवर ध्याऊ।
हो तत्त्वप्रकाशी स्वर्गनिवासी करो कृपा ज्यों शिव पाऊ।।
ॐ नहीं श्री आ "" अक्षतान् नि. स्वाहा।।
ले कमल केतकी जुही चमेली चंपा आदिक फूल महा।

गूरु चरण चढाऊ वहु हर्षाऊ काम नगाऊं तुरत अहा ।।
श्री शांतिसिन्धुजी वोरसिन्धुजी चन्द्रसिन्धु मुनिवर ध्याऊं ।
हो तत्त्वप्रकाशी स्वगंनिवासी करो कृपा ज्यों शिव पाऊ ।।

ॐ न्हीं श्री आपुष्पाणि नि स्वाहा । ४ ।। ले व्यंजन ताजा हे मुख साजा, खाजा आदिक थाल भरा । पुर चरण चढाऊं भुधा नशाऊं हर्ष बढाऊ भनित भरा ।। श्री शांतिशिन्धुजी वीरसिन्धुजी चन्द्रसिन्धु मुनिवर ध्याऊं । हो तत्वप्रकाशो स्वर्गनिवासी करो कृपा ज्यों शिव पाऊं ॥ ॐ वहो आ नेवेद्यं नि स्वाहा

जगमग जगमग जरोति मनोहर दोपक है प्रमु ले आऊ। मैं करूं भारती करू चीनती, मोह नष्ट अब कर पाऊ॥

श्री शातिसिन्धुनी वीरोसन्धुनी चन्द्रसिन्धु मुनिवर ध्याऊ। हो तत्त्वप्रकाशी स्वर्गनिवासी करो कृपा ज्यों शिव पाऊ ॥

ॐ ऱ्हीं श्री आ '' ''दीप नि. स्वाहा ।। ६ ।। बहु द्रव्य सुगिवत हे गुरु ला कर्पूर मिला तुम हिग लाया। अग्निमें जारों कर्म विदारों पावे शिव सुख अधिकाया ॥ श्री शातिसिन्धुजो वीरसिन्धुजी चन्द्रसिन्धु मुनिवर ध्याऊ। हो तत्त्वप्रकाशी स्वर्गनिवासी करो कृपा ज्यों शिव पाऊं।। ॐ ऱ्हीं श्री. आ. ''' घूप निस्वाहा।। ७।। नारग सुपारी श्रीफल भारी केला कमरख भरि थारी। फल चरण चढाऊं मन हुलसाऊ कीरति पाऊ सुखकारी ।। श्री शांतिसिन्धुजी वीरसिन्धुजो चन्द्रसिन्धु मुनिवर ध्याऊ। हो तत्त्वप्रकाशी स्वर्गनिवासी करो कृपा ज्यो शिव पाऊ।

ॐ ऱ्हीं श्री आ '''' फल नि स्वाहा ।। ८ ।। जल चन्दन अक्षत फूल मनोहर नेवज नयनन मनहारी। ले दीप धूप फल अर्घ्य उतारो सूरजमल शिव सुखकारी ।। श्री शांतिसिधुजी वीरसिन्धुजी चन्द्रमिन्ध् मनिवर ध्याऊ। हो तत्त्वप्रकाशी स्वगंनिवासी करो कृपा ज्यो शिव पाऊ ।।

ॐ ऱ्हीं श्री आ ' ' अर्घ्यं नि. स्वाहा ।। ९ ।।

अथ जयमाला-गीत

श्री शांतिसागर वीरसागर चन्द्रसागर मुनिवरा। घरकर दिगबर भेष तुमने जगत मन सब उद्धरा।। इन्द्र अरु नागेंद्र नरपति भक्ति कर सुख पाइया। हम भी सकल मन शुद्ध हो जयमालिका शुभ गाइया ।।

पद्धडी

जय शातिविन्धु आचार्य जान. तुम भवि जन तारक हो महान। तुम जनक भीमगोडा सुमात, है सत्यवती जगमें विख्यात ।२। है दक्षिण भोजसुग्राम सार, तुम जन्म हुआ आनन्दकार। उन्नींसो अठाइस साल माहि, आषाढबदो छट दिन कहाहि ॥३॥ मृनिमार्ग प्रगट कीना महान, तुम मुनि बन जगको दिया ज्ञान । तुम घोर तपस्वी ध्यान लीन, सिहनिष्क्रीडितव्रत आदि कीन। तुम देह चढा इक सर्प आय, या ऋर भयंकर फण उठाय। तुम चिगे न तिष्ठे ध्यान लीन, महिमा जिन धर्मसु प्रगट कीन ।। इक दुष्ट हाथमें ले कृपाण, मारन तुम आयो कोधवान । उपसर्ग सिंह चिवटी अपार, तुम सहा न कीना कुछ विचार ।६। तुम नगर नगरमे कर बिहार, भवि जीव सुधारें थे अपार । अतिममें कुथलगिरी आय, तहं ली समाधि निज तजी काय 🕓 भादव बदि द्वितीया को सुजान, तुम सुरपद पाया था महान । मै विनऊ हे गुरु शीश नाय, मेरी भवबाधा हरो आय ॥ ८ । हे वीरसिन्धु गुरुराज आप, जो पूजे मिटता जगत ताप। जय बाल ब्रह्मचारी महान, तुम शांतिसिधुके शिष्य जान ॥ दक्षिणमे वीरम ग्राम जान, उन्नीसी तेतिस साल मःन। आषाढ शुक्ल पूनम कहांहि, सुत जन्मे हर्ष हुआ तहाहि ॥१०॥ पितु रामसुक्ख गुण गण निवान, भागू देवी मां तुम पिछान। यौवनमें ही सब तन विशाल, जग झझट दीक्षा घर कृपाल 🔢

थी करी तपस्या घोर आप, प्रगटाया जगमे यश प्रतात ।
भवि जन अनेक तुम चर्ण आय, जिन दीक्षा धारी शांति पाय ।।
या हुआ कठोर अदीठ रोग, मिर्गी कंपन वश कर्मभोग ।
तुम सहा सर्व हो शांति धीर. जप णमोकार तुम सत्य वीर ।
कर देश देशमें वृष प्रचार, आये खान्या जयपुर मझार ।
आचार्य पट्ट लीना प्रधान, गुरु शांतिसिंध आज्ञा प्रमाण ।।१४ ।
थे वहां हजारों भविक जान, मुनि अब्द १ तहां थे ज्ञानवान ।
यो आर्या अब्दादश२ सुजान, शांक्य जु श्राविका अरु महान ।।
इन बीच समाधी हुई जान, आश्विन कृष्णा मावस महान ।
द्वय सहस्र चतुदंश साल जान, हम बिनवे गुरुवर भित्त आन ।।
जय चद्रसिंधु मुनिराज आप, दिग आजाऊ तुम यश प्रताप ।
दक्षिणमें नांदसु गांव जान, विद माघ त्रयोदशी जन्म मान ।।
सीता मां नथमल पिता जान, जय छोड बने मुनिवर महान ।
श्री शांतिसिंधु श्रिय शिष्य आप, तुम पूजे मिटता जगत ताप ।।

१-(१) आचार्य श्रीमहावीरकीतिजी, (२)आ. श्री शिवः सागरजी, (३) धर्मसागरजी, (४) पद्मसागरजी, (५) जयसागरजी (६) श्रुतसागरजी, (७) सन्मतिसागरजी, (८) वर्द्धमानसागरजी।

२-मायिका-धर्ममितिजी, वीरमितिजी, विमलमितिजी, पार्वन मितिजी, (जयपुर) पार्श्वमितिजी (अजमेर) सिद्धमितिजी, इन्द्रमितिजी, सुमितिमितिजी, शातिमितिजी, वासुमितिजी, ज्ञानमितिजी, सुपार्श्वमितिजी, पद्ममितिजी, चन्द्रमितिजी, श्रुल्लिका ज्ञानमितिजी, जिनमितिजी, अजितमितिजी।

इक पांच खंढे करते सुध्यान, निर्जन थलमें आगम प्रमाण।
गर्मी अरु धूपमें आप जाय, फिर निश्चल ध्यान सु तुम लगाय।।
सिह निष्की छित आदिक महान, तप तपते गुरुवर जगत मान।
मिथ्यात्व मान्यताको मिटाय, तुम आरण प्रथोंको बताय।२०।
मुनि विद्वेषो इक नगर माहि, था किया महा उपसगं आहि।
या सहा, तजा निह धैर्य धीर, आगम सेवक तह भये वीर।।
इकिसह तुम्हारा छल प्रभाव, था हुआ शांत तज कूर भाव।
तुम देश देशमें कर विहार, प्रगटाई जिन महिमा अपार।२२।
फागुण कृष्ण पूनम सुजान, था दो हजार संवत् महान।
बडवानी में जा ली समाधि, सुरपद पाया वृषको अराधि।२३।
श्री शांतिसिन्धू श्री वीरसिन्धु, गुण गण निधान श्री चन्द्रसिन्धु।
सूरजमल वर्णी नमें आय, मेरी भव बाधा हरो आय।। २४।।

घता

जय शांति म्निशा वीर गणेशा चन्द्र गुणीशा ताप हरो। भवदिवसे तारो सुख विस्तारो कर्म निवारो पार करो।।

ॐ न्हीं श्री स्व. आचार्य श्री शांतिसागर वीरसागर चंद्र-सागर मुनिभ्यो अध्यै नि स्वाहा।

> दोहा-शांति बीर अरु चन्द्र मूनि जो पूजे है आय। भवदिधसे वह पार हो, सुख अनन्त विलसाय।। इत्याशीर्वाद पुण्यांजिल।

स्व. परमपूज्य चा. च. आचार्य श्री १०८ शांतिसागरजी महाराजकी पूजन

दोहा

सीम्य छबी आचार्य की, करत शांत परिणाम। शांतिसागर नाम तुव, पुन पुन करहु प्रणाम। आओ आओ प्रेम लख, तिष्ट तिष्ट सुखकंद। सेवक जान दया करी, हृदये अति आनन्द।

ॐ न्हीं ज्ञांतिसागर मुनींद्र अत्र अवतर अवतर सर्वीपट इत्याव्हानम् ।

ॐ न्हीं श्री शांतिसागर मुनीन्द्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ ठ. म्थापनम् ।

ॐ हीं श्री शांतिसागर मुनींद्र अत्र मम सिन्निहितो भव भव वषट् सिन्निधीकरणम्। (परिपुष्पाजि क्षिपेत्)

छंद त्रिभगी (अव्टक)

कचन झारी प्रामुक जल ले, पूजूं तुम पद पद्म सुहाय। प्रभू हमारी जन्म जरा अरु, मृत्यु भेंट शिवपद सु कराय॥ संघ सहित प्रभु आग पद्मारे, आनन्द हृदय रह्मो उमगाय। पंचम काल कलक मिटाकर, काल चतुर्थ दतायो आय॥

ॐ न्हीं श्री शांतिसागराचार्येभ्यः जन्म जरा मृत्यू विना-द्यानाय जन्म् निर्वेषामीति स्वाहा ॥ जलं॥ १॥ मलयागिर घन सार गार, केशर कपूर तामें विसवाय। भवाताप मिट जाय हमारो, यासे तुम चरनन ढरवाय।।. संघ सहित प्रभु आप पधारे, आनन्द हृदय रह्यो उमगाय।, पचम काल कलंक मिटाकर, काल चतुर्थ बतायो आय।।.

> ॐ न्हीं श्री शांतिसागराचार्येभ्यः संसार ताप विनाशनाय चंदनम् निर्वंपामीति स्वाहा ।। सुगंधं ।। २ ।।

अक्षत शुभ साने उज्जल लेकर, चरचों तम पदकंज घराय।
अक्षय पद भम प्रगट करादो, भाव सहित तुम भिवत कराय।।
सद्य सहित प्रभु आप पद्यारे, आनन्द हृदय रह्यो उमगाय।
पंचम काल कलंक मिटाकर, काल चतुर्थ बतायो आय।

ॐ न्हीं श्री शांतिसागराचार्येभ्य अक्षयपद प्राप्तेय अक्ष-तान् निर्वेपामीति स्वाहा ।। अक्षतं ।। ३ ।।

बेला चमेली कुद कदम गुल, गेंदा जुहि मचकुंद मंगाय।
मोगर केतिक अरु गुलाबके, सुमन समिपत मदन षलाय।।
संघ सहित प्रभु आप पधारे, आनन्द हृदय गृह्यो उमगाय।
पचम काल कलंक मिटाकर, काल चतुर्थ बतायो आय।।

ॐ न्हीं श्री शांतिसागराचार्येभ्यः कामबाण विध्वंसनाय पुष्पम् निर्वेपामीति स्वाहा ॥ पुष्पं ॥ ४ ॥

पूडी खुरमा लाडू पेठा, सेव सलोनी सर्व सजाय। बाबर वरफी फेनी गोझा, घरत चरन मम क्षुधा विलाय॥ संघ सहित प्रभु आप पधारे, आनन्द हृदय रह्यो उमगाय। पंचम काल कलक निटाकर, काल चतुर्थ बतायो आय॥ ॐ -हीं श्री शांतिसागराचार्येभ्यः क्षुघारोग विनाशनाय नैवेद्यम् निर्वपामीति स्वाहा ॥ नैवेद्यम् ॥ ५ ॥

घृतकी ज्योति जलाय दीपमें, ढूंढू निजपद गयौ हिराय । लावो-तम ढिग गुरुवर प्यारे, मोह अंघेरा दूर भगाय ।। संघ सहित प्रभु आप पद्यारे, आनन्द हृदय रह्यो उमगाय । पचम काल कलंक मिटाकर, काल चतुर्थ बतायो आय ।।

> अ न्हीं श्री शांतिसागराचार्येभ्यः मोहान्धकार विनाश-नाय दीपम् निर्वपामीति स्वाहा ॥ दीपम् ॥ ६ ॥

दशिविधि गंध चूर्ण करवाकर, खेऊं वैसांदुर महकाय। आठ करम मम काठ जलाओ, जो ससार मांहि रुलवाय॥ संघ सहित प्रभु बाप पद्यारे, आनन्द हृदय रह्यो उमगाय। पचम काल कलक मिटाकर, काल चतुर्थ बताओ आय॥

> ॐ न्हीं श्री शांतिसागराचार्येभ्यः अब्टकर्मदहनाय धूपम् निवंपामीति स्वाहा ॥ धूपम् ॥ ७ ।

आम अंगूर दाख दाडिम वर, केला कमरख श्रीफल लाय। लोंग बदाम पूगीफल पिस्ता अरपों फल शिव मोहि कराय॥ सघ सहित प्रमु आप पद्यारे, आनन्द हृदय रह्यो उमगाय। पंचम काल कलंक मिटाकर, काल चतुर्थ बतायो आय॥

> 🌣 न्हीं शांतिसागराचार्येभ्यः मोक्षफल प्राप्तये फलम् निर्वपामीति स्वाहा ।। फलम् ॥ ८ ॥

जल चन्द अक्षत पुष्पोंसह, नित नैवेद्य दीप प्रजुलाय। धूप फलोंसे पूजूं तुमपद, पद अनर्घ्य अब अवशि मिलाय ॥ तंव सिहत प्रभु आप पद्मारे, आनन्द हृदय रह्यो उमगाय । रचम काल कलंक मिटाकर, काल चतुर्थ बतायो आय ।।

ॐ न्हीं श्री शांति शगराचार्येभ्यः अनर्ष्यद प्राप्तये अर्घ्य निवंपामीति स्व हा । अर्घ्यं ॥ ९ ॥

दोहा

शांति वीर नेमी मुनी, कुंथु आदि निभ पाय।
ऐलक, कुललक विमल चरित नवीं नमीं शिरनाय।।
संच तिहारी परम शुभ, भिव जीवन सुलदाय।
मोहीजन जो जगतके, सो क्यों दरश लहाय।।
अर्घ चढा चरचों चरन, करके भिवत अनूप।
किया कृतारथ आय मुझ, बनो तिजगके भूप।

ॐ न्हीं श्री शांति, बीर, नेमं, कुंथुआदिश्यः अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥ पूर्णार्घ्यं ॥

दोहा

अब वरनो जय मालिका, सुनहु भविक चितलाय।
गुण बहुते आचार्यमें पर कछु कहहुं सुनाय।।
जयमाला

पद्धडी छंद

(कई तर्जों में गाया जाता है) जय शांति समुद्र तुम गुण अनन्त, हम गाकर कबहु न पाय अत । तुम दक्षिण देश जनम लहंत, है भोज ग्राम जो शुभ वसत । १।

वितु नाम भीमगोंडा लहाय, माता तुम सत्यवते कहाय। तुम बाल ब्रह्मचारी रहाय, लघु वयमें दीक्षा धरी जाय ।२॥ आत्मिक अपरिमित बल बढाय, अध्ययन ध्यान कियो बनाय । वारह भावना भाई अनूप, समझो है जगको पूर्ण रूप ॥३॥ निज चेतन अरु तन भेद पाय, चेतनसे ममतु तनसे छुडाय। तुम धीर दिगंबर रुपधार, तेरह विधि चारित चरे सार ॥४॥ ितम ग्रीषम वर्षा ऋतु मझार, प्रकृति कृत वेदन सहे सम्हार। हिममे सरबर तट तप कराय, ग्रीषम गिरि शीर्ष मगन रहांय ।। वर्षामें वृक्ष तले सुजान, त्रय गुप्तिकी तीर कमान तान। मारे कर्मनको बिना कोध, निज आतमको घ्यावें सुकोध ॥६॥ इक्त बार गुफार्मे नागराज, आये तुम पर उपसर्ग साज। बहु काल सर्प कीडा करांय, तुम सुखमय ध्यान धरो सजाय । तहा दर्शक जन दुःख अति करांय, तुम अचल रूप मानों धराय। जब फणपति अपने गयोथान, श्रावक जन मन सतोष आन ।८। तुम्हरो यश प्रकट भयो मुनीश, जैनी जन नावें तुम्हें शीश। हम उत्तर वासी रुचि घरन्त, तुम दर्शन कब होवे महन्त ।।९।। धन घडी आज हम जगो भाग, लखलोने साचे गुरु सुराग। तुम जिन दक्षिणमें धर्म दंड, फेरी हे गुरुवर बहु प्रचड ॥१०॥ त्यों उत्तर प्रांत लियो सुधार, शुभ दया धर्मका कर प्रचार। हम ढील करी जिन धर्म बीच, अःकर तुमने सुध लई खीच।। प्रभु तुमिबन पार लगे न नाव, मिथ्यात्व नद्द परचड बहाव। हम कहे तुम्हे अकलक स्वामि, जिन धर्म उवारक सुगुरु नामि ।। यह संघ तिहारो परम शुद्ध, हम लख लख रोज लहें सुबुद्ध । तम कौन मंत्र फूको बनाय, मानादि कषायें नहि दिखांयें ॥१३॥ सब मधुर मधुर भाषण करंत, निज काज सभारत सर्बोह संत । श्रावक जत मन नहिं दु खन देत, उपदेश करत सद्बुद्धि हेत ॥ चर्याविधि लख लख नगर लोग, बहुहों प्रसन्न नहि रहत सोग। सब लोग चहत निज गृह मझार, ये चरण पर्डे स्वामि तुम्हार ॥ इस हेतु खडे होते है द्वार, भोजन्की विरिया कलशधार। आबाल वृद्ध नर नार साथ, कोईके भाग्यसे आओ नाथ ।१६। जिसके घर पहुंचत कोई संत, आई जानत निवि है तुरंत। बहु भिवत सहित दें असन आप, काटन चाहत भवके सुपाप 11 जिस घरमे नींह प्रभु पग परत, कोसत निज कर्मीको तुरंत। भोजन विवि प्रथा दई जनाय, हम जन्म कृतारथ तुम कराय ॥ नित प्रति शिक्षा क'ते बनाय, श्रावक जन सुनते मन लगाय। जन जेन अर्जन सर्वीह रहांहि, तुम दर्श करे धिन मुख कहांहि ।। प्रमु मोद बढो तुमसेय पांय, दिन रात ध्यान तुम्हरी रहाय। अब निज समान कर लेहि, मोहि यह जान रटत है नित्य तोहि।। हम उत्तर वासी धन्य भाग, निज मानत तम चरणोंको लाग। तम चरणन रज मस्तक धराय, हम सब कृतार्थ भये सुगुरु पाय।

दोहा

नमन करत चरणों पडत, अहो सुगुरु सुखदाय।
भव समुद्र तें काढ लो, शिव पथ शीघ्र दिखाय।।
ॐ -ही श्री शांतिसागराचार्येभ्यः अध्यं निर्वपामिति स्वाहा।।
घत्ता-श्रीशांति महंता गुणन अनंता पूजत संता भित भरा।
कुन्दन यश गावे, वांछित पावे, मोद लहावे नमन करा।।

श्री १०८ आचार्य वीरसागरजी महाराजकी पूजन

(रचयिता-चरणभक्त झ. सूरजमल जैन)

स्थापना-(गीताछंद)

शुभ ईर ग्राममे श्रेष्ठिवर है, राममुख अति भले।
पितु-मातु सुत भये है, लाल ही शा नामले।।
आचार्यवर भी शांतिसिंधु, के निकट तुम पहुचते।
छोड परिग्रह मुनि भये हैं, वीरसागर शोभते।।
ॐ न्हीं श्री वौरसागरस्वामिन् अत्रावतरावतर सवौषट्।
तेष्ठ तिष्ठ ठः ठः।। अत्र मम सिन्नहितो भव भव वषट्

अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ॥ अत्र मम सिन्निहितो भव भव वषट्

गगासिन्धुकी नीरमें लाऊ, मुनिमन सम शुचि होके। जन्म मरणके नाश करन को, धारा दे मद खोके।। वीरसागरजीके चरणोंकी पूजा करे मन भरके। रोग नशे और संपति वाढे, शिव ललनी ले वरके।।

रोग नहीं और संपति वाढे, शिव ललनी ले वरके।।
ॐ न्हीं श्री वीरसागर स्वामिने जलं निर्वंपामीति स्वाहा ।।१।।
भलयागिरि घासि चंदन नीको, शुभ सिताभ्र मिलाऊं।
अग्निशिखा शुभ मिश्रित करके,पद पंकजमें चढाऊं। वीरसागरजी
ॐ न्हीं श्री वीरसागरस्वामिने चदनं निर्वंपामीति स्वाहा ।।२।।
चंद्रकिरण सम उज्ज्वल अक्षतखंड विवर्जित लाऊ।
पुंज देतही तब चरणागे, अक्षय निधिको पाऊ। वीरसागरजी।
ॐ न्हीं वीरसागरस्वामिने अक्षतं निर्वंपामीति स्वाहा।। ३।।

वेल चमेली मरुवा दीना, कुसुम मनोहर लाया। कुसुमबाण मम नाशो मुनिवर,तव चरणोंमें चढाया। वीरसागरजी ॐ -हीं श्री वीरसागरस्वाििन पुष्प निर्वपामीति स्वाहा ॥४॥ घेवर फेनि खन्जक मोदक, कनका थाल भराऊ। तव चरणों में चढाऊं गुरुवर, क्षुधारोग नशाऊ । वीरसागरजी । ॐ न्हीं श्री वीरसागरस्वामिने नैवेद्यं निर्वपामीति स्वार्ग ।।५।। स्वर्ण आरति गोघृत भरिके, शुद्ध कपूर मंगाऊं। जगमग जगमग आरित करिके, मिथ्यातमको हराऊ ॥ वीर ॥ ॐ न्हीं श्री वीपसागरस्वामिने दीप निर्वपामीति म्वाहा ॥६॥ द्रव्य अनेककी धूप बनाके, अग्नि संग खिपावे। अध्ट करम तत्काल नशतही, मोक्ष यमणिको पावे। वीरसागरजी ॐ न्हीं श्री वीरसागरस्वामिने घूपं निर्वंपामीति स्वाहा ॥ ७ ॥ आम्म काम्म बादाम सुपारी, केला अमरूद लाऊं। श्रीफल आदिक, उत्तम फलले भेट धरत हर्षाऊ । वीरसागरजी ॐ -हीं श्री वीरसागरस्वामिने फलं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ८॥ तोयं चन्दन शालिजतन्दुल, पुष्पं तूप लाके। दीपं धूपं पुंगी फलीघं, अर्घ्य धरो कंनाके ॥ वीरसागरजी ॥ ॐ न्ही श्री बीरसागरस्वामिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥

भेरषी छंद

धन्य दिन आजका सबका किया मुनिराजका दर्शन। इन्हिका वदनाम्बुज देखे, हुआ है सबका मन पर्सन।। मुझे जिन कर्मोने घेरा, करादो उनसे तुम छुटकन।
करो मत देर अब गुरुवर, हुआ हूं इनसे में अकुलन।।
सुना है आपको मुनिराज, करम काटनमें तुम गुणवन।
रिव ब्रह्म आया चरणोमें, वरादो सोक्षको छलनन।।

।। अथ जयमाला ।। तर्ज राधेश्याम ।।

धन्य धन्य है पिता रामसुख, माता भागुबाई है। तिनने पुत्र जन्म दिया है, भूतल आनन्द छाई है।। १।। एक सहसनव द्वात्रिशतमे, आषाढ शुक्ल हम मानी है। भानुसा जगमें चमकगया, पूनमको पावन कीनी है।। २।। लालहीरा तुमको कहते, सचमुचमें हीरा भाया है। गङ्गवालकुलमें जन्म लिया, और माता गोद खिलाया है।।३।। दक्षिण देशमे जन्म आपका, ईरगांव शुभ भाता है। वन उपवन और कूप खाईसे, मनको बडा लुभाता है।। ४।। मात पिता नवयौवन सुतको, लखकर शादी ठानी है। बाल ब्रह्ममे रहूं पिताजी, शादि नहिं करानी है।। ५।। आचार्यवर श्री ज्ञांतिसागर, नाम ऐसा सुनते थे। खोजत खोजत पता चला तब, कोनुर गांवमे रहते थे।। ६।। हीरा जाल और खुशालचन्द्र, दर्शनली वहां जाते हैं। नय कुशल मूनिवरको पाकर, मनही हषति है।। ७।। दर्शन करके जब घर आये, मन वैराग्य समाया है। फिर जाकरके भिलें गुरुसे, चितमें यह जमाया है ॥ ८॥

एक सहसनों असिसम्बतमें, कुंभोज नगर जब आते हैं। फाल्गुन महीना शुक्ल सप्तमी, क्षुल्लक व्रतको पाते है ।। ९ ।। सूरीने भी दोक्षा देकर, वीरचन्द्र शुभ नाम घरा। दोनों धन्य समझते हैं, और अपनेको कृतार्थं करा ॥ १० ॥ नगर नगरमें विहार करते, समडोडीमें आये है। तिरुलुष मात्र परिग्रह जो है, कोषिन भी दुःख दानी है।।११॥ उन्नीसो इक्यासि सम्वत माहि, मुनि वत लेवें ठानी। आश्विप सुदि ग्यारसके दिन ही, रूप दिगम्बर पाये है ॥१२। पच महाव्रतको तुम पालें, पंच समिति चित आनी है। पचेन्द्रियको वशमें करके, षट आवश्यक मानी है।। १३।। सप्तशेष गुणोंको धारे, मनमें खुशी मनाते है। बारह भावनको तुम भाके, फूले नहिं समाते है।। १४।। ज्ञानका पगडा जीलका कन्ठा, धर्मका जामा धारे हैं। मन बच काय कटारी लेकर, पार सेन्यको मारे हैं।। १५ ।। द्वाविशपरीषह बारह तपकी सैन्य बनाकर जावेंगे। कर्माप्टोंको दूर भगाके, शिव सुन्दरको पार्वेगे ॥ १६॥ देश देशमें भ्रमते भ्रमते, बहुत प्रतिष्ठा रचाई है। नगर पिडावेमें भी आकर, विव प्रतिष्ठा कराई है।। १७ ॥ सघमें आदिसागरजी भी बहुत ज्ञान्त कहलाते है। स्वानुभूतिमे मग्न रहे, तब खाहिरसे भय खाते हैं ॥ १८ ॥ और भी संघमें क्षुत्लक आदिक, बहुत समयसे रहते हैं। ध्यानाध्ययनमे मग्न रहे, और गुरुसे पढते रहते है ॥ १९॥

सूरज मवसागर पढता था स्वामिन् उसको वचा लिया। नार बार गुण गाता भगवन, चरण दारणमें लगा लिया॥२०॥

॥ धत्ता छंद ॥

जय इन्द्रिय रोधं मुनिव्रत धारं, कामं कोधं लोम हरम्। जय भव निधि तरणं शांति करणं, शीलमगारं मोह हरम्।। दः न्हीं श्री वीरसागर स्वामिनें अध्यं निवंपामीति स्वाहा।।

॥ सोरठा ॥

वीरसागर मुनिराज, जो भवसिन्धुर्मे पढे। तिनका करो कल्याण, ताते आतमको लखे।। पुष्पांजील।।

श्री पू. १०८ आचार्य शिवसागरजी महाराजकी पूजन

(रनियता-संघाय ज. सूरजमल जैन)
।। स्थापना ।। दोहा ।।
हे सूरी वर पूज्य श्री शिवसागर ऋषिराय।
हृदय विराजो आयकर तुम हो भिव सुखदाय।।
वीरिसन्धु आचार्यके विनयी शिष्य महान।
पूजूं मन वच काय से ज्यों पहुचूं शिव थान।।

अन्हीं श्री शिवसागर आचार्य परमेष्ठिन् अत्र अवतर २ संवीषट् आव्हाननम् । अन्हीं श्री शिवसागर आचार्य परमेष्ठिन् अत्र तिष्ठ २ ठः ठः इति स्थापनं ।

अ न्ही श्री शिवसागर आचार्य परमेष्ठिन् अत्र मम संनिहितो भव २ वपट्।

अथाष्टकम्- चाल-जोगीरासा

गगाजल सुस्वादु मनांहर लेकर झारी भरिये। चरण कमलमें घारा वेकर जन्म मरणको निशये।। शिवसागर काचार्य महामुनि तुम हो भवि सुखदाई। पूज रचावे जो भवि साकर पार्चे सुख अधिकाई॥

😂 न्ही थी आचार्य शिवसागराय.... ..जल नि. स्वाहा ।

केशर शुद्ध ियसो अरु चन्दन, शुमकर्पूर मिलावो । श्री मुनिवरके चरण जनों भवि भव आताप नशावो ।। शिवसागर आचार्य महामुनि तुम हो भवि सुखदाई । पूज रचावे जो भवि आकर पार्वे सुख अधिकाई ॥

ॐ -हीं श्री आचार्य शिवसागराय चन्दनं नि स्वाहा ।
लेय अखडित शालिज तन्दुल जो भिव मुनि ढिंग आवे ।
चरण कमलमें पुंज देत ही अक्षय निधिको पावे ।।
शिवसागर आचार्य महामुनि तुम हो भिव सुखदाई ।
पूज रचावे जो भिव आकर पार्वे सुख अधिकाई ।।

अ न्हीं श्री आचार्य शिवसागराय अक्षतान् नि स्वाहा । चम्पा कुन्द गुलाब जुईके फूल अनेक मगाये । पद पक्रजको पूजो याते काम महा निश्च जाये ।। शिवसागर आचार्य महामुनि तुम हो भवि सुखदाई । पूज रच वें जो भवि आकर पावे सुख अधिकाई ॥

अन्हीं श्री आचार्य शिवसागराय पुष्पं नि स्वाहा ।
मोदक फेनी गोजा आदिक शुभ नैवेद्य बनावे ।
चरण चढावे जो मुनिवरके क्षुधा रोग निश्च जावे ॥
शिवसागर आचार्य महामुनि तुम हो भिव सुखदाई ॥
पूज रचावे जो भिव आकर पावें सुख अधिकाई ।

अन्हीं श्री आचार्य शिवसागराय नैवेद्यं नि. स्वाहा । स्वर्णपात्रमें गोघृत अरु कर्पूर सजाकर लाया। करू आरती करूं विनती मोह नशो मुनि राया॥ शिवसागर आचार्य महामुनि तुम हो भवि सुखदाई। पूज रचावे जो भवि आकर पावें सुख अधिकाई।।

इन्हीं श्री अ चार्य शिवसागरायदीपं नि. स्वाहा।
मल्यागिर शुभ चन्दन आदिक की शुभ धूप बनाई।
खेवो अग्नि मझार जले बहु कर्म महा दुखदाई।।
शिवसागर आचार्य महामुनि तुम हो भवि सुखदाई।
पूज रचावे जो भवि आकर पावें सुख अधिकाई।।

ॐ ऱ्हीं श्री आचार्य शिवसागरायधूपं नि. स्वाहा ।

आम्म अनार सुश्रीफल केला पिस्ता आदिक लाऊ। चरण चढाऊं श्री गुरुवरके मोक्ष महा फल पाऊं।। शिवसागर आचार्य महामुनि तुम हो भवि सुखदाई। पूज रचावे जो भवि आकर पावें सुख अधिकाई।।

ॐ हीं श्री आचार्य शिवसागराय...फलं नि. स्वाहा ।

जल चन्दन तन्दुल आदिक शुभ आठों द्रव्य मिलावे। जो गुरु चरणोंको आ पूजे ज्ञान ''सूर्य'' प्रगटावे।। शिवसागर आचार्य महामुनि तुम हो भिव सुखदाई। पूज रचावे जो भिव आकर पावे सुख अधिकाई।।

ॐ -ही श्री आचार्य ज्ञिवसागराय अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

दोहा

शिवसागर मुनिराजजी, हो जगके हितकार। गाऊ अब जयमालिका, सुनो भविक मन हार।।

जयमाला । पद्धरी छन्द

जय शिवसागर आचार्य जान, भवि जीवनहित कर्ता महान । जय दक्षिण दिश अडगांव ग्राम, श्रेष्ठी नेमीचन्द तहां महान ॥ नित पत्नी दगडाबाई जान, शुभ पुत्र जन्म दीना महान । तुम जन्म नाम हीरामुलाल, लख मात विता होते निहाल 🕦 खडेलवाल जाति अनूप, तुम गोत्र रांवका है सुरूप । पढ लिख कर तुम ज्ञानी सुहोय, ससार भोगको शीघा खोय ।। जय बाल ब्रह्मचारी महान् , गुरु वीरसिन्धु ढिंग तुरत आन । ली सप्तम प्रतिमा तुम दयाल, मुक्तागिरीमें सब अज्ञुभ टाल ॥ जब आया संवत् दो हजार, फागुन सुद पंचम तिथि सुखार। श्री सिद्यवर कूट सु क्षेत्र जान, ली क्षुल्लक दीक्षा तुम महान् ।। शिवसागर तुमरा रखा नाम, तुम तप तपते आगम प्रमाण । फिर दो हजार छह साल माहि, रहते गुरु संघ नागौर जाहि ।। गुरवीर सिंधुसे कहत सीय, जिन दीक्षा देवो नाथ मीय। वैराग्य भाव तब जगमगात, मानो शिव मारग ही दिखात ॥ आसाढ सुदी ग्यारस सुजान, तुम घरा दिगम्बर रूपजान। छत्तीस गुणोंको हे सुवीर, तुमपालो परिषह सहो धीर ॥ तुम सघमें रह करके महान्, तप करते ज्ञानी तुम सुजाम । फिर दो हनार चौदह सुसाल, आसोज बदी मावस कुपाल ॥ जब जयपुर खान्यामें महान्, गुरुदेव समाधी हुई जान। हावीर मकीर्ति सूरी समक्ष, अरु वर विधि संघ तहं रहत दक्ष ।।

फिर कर आग्रोजन तहां जान, कार्तिक सुद ग्यारस दिना मान। आचार्य पट्ट दीना महान् तुमको तब हे गुण गण निधान।।११।। हम गुण गावें तुमरे महान्, तुम गुण गण की हो खान जान। हम नमन करे मस्तक नमाय, सूरजमल वर्णी हर्ष लाय।।१२।।

घता

जय जय मुनिवर जी है ऋषिवर जी,

तुम चरणन हम नमन करें।

जय महाव्रतधरजी करुणा करजी,

तुम पूजे सब कर्म हरें।।

👺 न्हीं श्री आचार्य शिवसागरायअर्घ्यं नि. स्वाहा।

दोहा

शिवसागर आचार्यको, जो पूजे मन लाय। स्वर्ग संपदा भोग कर, निश्चय शिवपुर जाय।।

- इत्याशीर्वादः -

स्वर्गीय श्री १०८ आचार्य शांतिसागर, वीरसागर चन्द्रसागर मुनित्रयकी

सम्मिलित आरती

(ले-ब्र. सूरनमल जैन)

(संध्या समय वोलनकी, चाल-ओ जय जिनवर देवा)
ओं जय क्षांति वीर मुनिराय, स्वामी जयचन्द्र निन्धु मुनिराय।
आरती तुमरी उतारूं २, जय जय जय मुनिराय ॥ ओं जय।।
नगन दिगम्बर तुम हो स्वामी, सुन्दर काय लखाय।
करी तपस्या भारी २, शिव रमणी हुलसाय।। ओं जय।।
ज्ञान सिन्धु सब जन हितकारी, अद्भुत महिना पाय।
सुरपति पूजत तव चरणोंको २ हर्ष हर्ष शिंग्नाय।। ओं जय।।
मूलगुणोंको तुमनें पाले, दोष रहित मुनिराय स्वा।
सत उपदेश सुनाकर २, सन्मारग वतलाय।। ओं जय।।
अन्त समय निज लख कर स्वामी, ली समाधि हुलसाय।
स्वर्ग पधारे गुरुवर तुम हो, सुमन महा पद पाय।। ओ जय।।
इन मुनिवर की दीपक लेकर, जो आरती उत्तराय स्वामी।
" सुरज" शिवपद पावे २, सुल सपति अधिकाय।। ओ जय।।

श्री शांतिसागर महाराजकी आरती

(रचियता-धर्मरत्न पं. लालारामजी ज्ञास्त्री)
करू आरती ज्ञांति सिन्धुकी, मगलमय आचार्य प्रमुकी ।।
मारत भरमें संघ चलाया सब लोगोंसे पाप छुडाया ।
रत्नत्रय भी प्रहण कराया, जूद स्पिशत जल छुडाया ।। करूं ।।
नागोपद्रव तुमने जीता, केटोपद्रव भी तुमने जीता ।
घोर तपाची तुम विख्याता, हो तुम विघ्न निवारक त्राता । क ।
जिनालयोको पवित्र रखने, अन्न त्याग तुमने ही किया ।
नाना कोटि मत्र जप कर्ता, राष्ट्र मित्रमडलवर कर्ता ।। क. 1।
ताते यह आरती तुम्हारी, करूं भिवतवश विघ्न निवारी ।
मोक्षमार्ग हमको भी दीजे, अपने सम हमको भी कीजे ।।
करू आरती शांतिसागरकी, मगलमय आचार्य प्रमुकी ।।



जिल्ली वीरसागरजी महाराजकी आरती

(ले-ब्र सूरजमल जैन)

अ जय वीर सिन्धु मुनिराय-स्वामी जय वीर सिन्धु मुनिराय। आरती तुमरी उतारूं २ जय जय जय मुनिराय।। अ जय।। वीर गांवमें जन्म आपका-भागु मां बतलाय, स्वामी— रामसुखके प्यारे २ हीरालाल कहाय।। अ जय।। यह ससारा दुखमय जाना शांति सिन्धु ढिग जाय, स्वामी— धरी दिगम्बर दीक्षा २ मोह सुभट भगवाय।। अ जय।। छत्तीसमहा तुम गुणको पालें मनमें वहु हर्षाय, स्वामी— कर तपस्या भारी २ अनुभव रस फल पाय।। अ जय।। इन मुनिवरकी करे आरती जगमग ज्योति जलाय, स्वामी— " सूर्यं" तेज सम चमके शिव रमणी फल पाय।। अ जय।।

श्री शिवसागरजी महाराजकी आरती

(ले-ब्र. सूरजमल जैन)

ॐ जय शिवसागर मुनिराज, स्वामी जय शिवसागर मुनिराज।
आरती तुमरी उताह २ तारण तरण जहाज ।। ॐ जय ।।१।।
नेमीचन्दके तुम सुत प्यारे, दगडा मां सुखदाय—स्वामी।
बीर सिन्धु गुरु कीने. २ राग द्वेष नहीं पाय।। ॐ जय।। २।।
भेष दिगबर धरा आपने, छोड कुटुंब परिवार—स्वामी।
मोह पिशाचको मारा, २ शिवरमणी भरतार।। ॐ जय।।३।।
दीपक लेकर करे आरती जो प्राणी सुखदाय—स्वामी।
"सूरज" शिवपुर पावो२ नमो नमो तुम पाय।। ॐ जय।।४।।

श्री आदिनाथ भगवानकी आरती

(ले.-ब्र. सूरजमल जैन)

ॐ जय ऋषभदेव नाथा । स्वामी जय ऋषभदेव नाथा ।। आरती तुमरी उतार्रु २ देवी सुख साता ॥ ॐ जय ॥ १ ॥ नाभिरायके प्यारे नन्दन मरु देवी लाला। आदिनाथ है अघहर २ जगमें विख्याता ॥ 🌣 जय ॥ २ ॥ जन्म महोत्सव करने आये स्वर्गीके नाथा। नाचे कूदे अद्भुत २ मनमे हर्षाता ।। ३४ जय ।। ३ ।। स्वानुभवकी घूनि रमाके अब्ट कर्म जारे। लोकालोक प्रकाशक केवल दर्शाता ॥ ॐ जय ।। ४ ॥ नैनापुरमें आप विराजे क्यामवरणस्वामी, प्रभु पद्मासन स्वामी भामण्डल भी अद्भुत २ शिवमग दिखलाता ॥ ॐ जय ॥ ५ । दीप धूपसे करूं आरती मोह तिमिर नाशी। शुद्ध निरंजन तुम हो जय वीरजवंता '। ॐ जय ॥ ६ ॥ वीरसिन्धु मुनिराज पधारे वर्षायोग धरे स्वामी-' सूर्यं ' चरणमें आया देवो ज्ञिव माता ।। ॐ जय ।। ७ ।।

श्रावकपूजाविद्यान

श्री पार्श्वनाथ स्वामीकी आरती

(ले.-संघस्थ व सूर्यमल जैन)

जय जय पारसनाथ, ॐ जय नाथ, वासव शत तुम वन्दे।।। जय २ ॥

बाणारसी मुखकार जन्म विचार, अश्वसेनके चन्दे ॥ जय २ ॥ माता बामा लाल, नाऊ भाल, मेटो भवके फन्दे ॥ जय २ ॥ पंचकत्याणक सार, भये है अपार, अजी शिवपुरके वासिन्दे ॥ जय २ ॥

द्रम द्रम बाजत है मिरदगे मघवा नचत स्वछन्दे ॥ जय २॥ दोपक धूप बनाऊ, थाल सजाऊं आरती करू आनन्दे ॥ जय २॥ हिन्त वरन तन जान, अति सुख खान फण सोहे सिर खन्दे ॥ जय २॥

पद्मासन जिनराय, सौम्य लखाय भामण्डल सुखकन्दे ।। जय २।। वीर सिन्धु मुनिराय, गुरुजी वनाय सूर्य नमें आनन्दे ।। जय २।।

* * *

श्री शांतिनाथ भगवानकी आरती

(ले.- ब. सूरजमल जैन)

ॐ जय शांतिनाथ स्वामी। प्रभु जय शान्तिनाथ स्वामी। ॐजय।
मन वच तनसे बन्धु, जय अन्तरयामी।
गर्भ जन्म जब हुआ आपका, तीन लोक हुषें स्वामी।।
इंद्र कियो अभिषेक शिखरपर शिव मगके स्वामी। ॐ जय।१।
पत्म चक्ती भये आपही षट्खंडके स्वामी-प्रभु षट्-।
राज्य विभवको भोगे २, कामदेव नामी।। ॐ जय।। २।।
अतुल विभवको तृणवत त्यागी, हुये कर्म 'नाशी-स्वामी।
भये आप तीर्थंकर २ शिवरमणी स्वामी ।। ॐ जय।। ३।।
वीर सिन्धुको नमस्कार कर तव आपती स्वामी-प्रभु।
स्रज शिवपुर पावो २ महा सुख धामी।। ॐ जय।। ४।।



सातवी जिनवाणी, माता की;

वारति दु:ख हरन्ते ॥ ७॥

जो भवि आय अरे, पूज करे;

दिन दिन तिन आनन्दे॥ ८॥

भव दुख हरो कृपाल, मनोहरलाल';

शाह नमें सुख-फन्दे ॥ ९॥

श्री महावीर स्वामीजीकी आरती

(ले.- ब्र सुरजमल जैन)

जय जय सन्मितजो, सन्मितजो, वर्द्धमान, गुण खानो,
, आग्ती सुखदानी।
करू तोरी, होवे सुक्ख महानी जय जय स ।। १।।
स्वर्ग अच्युतसे हो, तुम आये. त्रिशला गर्भ मझारे।
सेवा कर माता छप्पना, कन्या आनन्द कारे ।। जय । २।।
भेत्र सिताको है तेरसको जन्म भयो तुम वीरा।

आसन कम्पा है स्वर्गींमे, सुमन करे जयकारा ।। जय ।। ३।।

श्रावकपूजाविधान

कीनो अभिषंक, मेर पर, वर्द्धमान उच्चिरियो। जय।। ४।।
भव तन जान लिया दुखकारा, त्याग किया उन सारा।
कीना लोचन है, केनोका, वाल ब्रह्ममुनि प्यारा।। जय।। ५।।
घोर तपस्या है प्रभु कीनी, घाति कर्म प्रजारा।
केवल ज्ञान लहा, सुखकारी, दे उपदेश सुखारा।। जय।। ६।।
पावापुरमे है सर सुन्दर, ध्यान धरा उस अन्दर।
नाश किये विधिको, अवशेषे, प्रभु पाई शिव सुन्दर। जय। ७।
वीर सिन्धुको सिर नावो गावो गुण अमलाना।
'सूरज' कर जोडे, प्रभु थारा, मिलता है शिव याना। जय।८।

[—] लेकर ऐरावत गज चिंढयो, इन्द्र महा परिवारा।
कुडलपुरमें है, तब आये, नृप सिद्धारय द्वारा।। जय।।
पुण्य विशाला है, इन्द्राणी, लेकर जिन महावीरा।
दीना पतिवरको, वह निरखे, न्हवन कियो सुखकारा।। जय।।
फिर वह इन्द्राणी, वस्त्रोंको, अरु आभूपण लेकर।
मुदित किये मनको, पहनाये, आरती दीपक गहकर।। जय।।

जिनवाणी माताकी आरती

(ले.-ब. सूरजमल जैन)

जय जय जिनवाणी, जिनवाणी। सरस्वति तू, अमलानि, आरती सुखदानी। करूं तोरी, पावें, सुख महानी, जय जया। १।। ग्यारह अग धरी, तू माता, च उदह पूर्व लहानी। तू है निर्दोषा, जगदम्बे, भविजन आनन्द दानी ।। जयः।। २। वीर हिमाचलसे, तू निकली, गौतम गंग समानी। फैली सब जगमे, शारदा, कहते सन्त महानी ।। जयः ।। ३ । आठों कर्म महा, दुःख देवे. नाशक तेज कृपाणी। भवदिध है तरणी, तू अम्बे, भव्य कमल विकसानी । जय ।४ पापी दुष्ट महा, तुझ ध्यावे, पावे मोक्ष निशानी। अविचल सुवस जहां, सिद्धोंका, तारण तरण बलानी । जय ।५ वीर सिन्धु महा, गुरु राया, सूर्व नमें गुणखानी। अद्भुत हे माता, तब ध्यावे, कर्म नशे दुःखदानी ।। जय । ६।

* * *

सिद्ध भगवानकी आरती

(चाल-जय जय पारसनाथकी) (रचियता-ब सूरजमल जैन)

जय जय सिद्धोकी, आरती करू अकलकी-जय जय सिद्धोंकी ॥ १॥

पहले मनुभवमे मुनिराया, बनकर कर्म खिपाया। पाय चतुष्टयको सुख पाया. भविजन आनन्द ध्याया।। जय जय।। २।।

आठो कर्म महा दुखदानी, नाश किया तुम ध्यानी । वसु गुण प्राप्त किया तुम ज्ञानी, ध्यावे तव श्रद्धानी ॥ जय जय ॥ ३ ॥

पर्व अठाईका है आया, सिद्ध चक्र मडवाया ।
तुम गुण पूज करे, हर्षाया, नाच नाच गुण गाया ।।
जय जय ।। ४ ।।

स्वर्ण रकाबीमें, गोघृत ले, सुन्दर दीप जलाया। धूप दशागीको फिर खेया, कर्म उडे दुखदाया।। जय जय।। ५ ।।

सिद्ध शिलामे जा, तुम बैठे लोकालोक निहारे। अविचल सुख जहां सिद्धोंका 'सूरज 'हो भव पारे।। जय जय।। ६।।